ज़रूरी मसाइल
और
दुआएं

ज़रूरी मसाइल और दुआएँ

संपादक
मौलाना मुहम्मद हनीफ़

अल हसनात बुक्स प्रा० लि०

विषय-सूची

अपनी बात

नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के मसाइल पर यों तो कई किताबें मौजूद हैं, लेकिन उनकी मोटाई की वजह से हर वक़्त अपने साथ रखना कठिन होता है। जनाब मौलाना मुहम्मद हनीफ़ साहब ने एक छोटी-सी किताब में हनफ़ी मस्लक की बुनियाद पर तमाम ही ज़रूरी मसाइल को थोड़े से शब्दों में और आसान भाषा में समेट लिया है। इसमें बोझल शब्दों के बजाए सबकी समझ में आने वाला अन्दाज़ अख़्तियार किया है कि मामूली पढ़े-लिखे लोग भी आसानी से मदद और रहनुमाई हासिल कर सकें।

इससे पहले मक्तबा अलहसनात दिल्ली मौलाना मिनहाजुद्दीन मीनाई साहब की किताब 'इस्लामी फ़िक़्ह मुकम्मल' छाप चुका है जो बहुत कम मुद्दत में बहुत मक़्बूल हो चुकी है, लेकिन ज़रूरत थी कि रोज़मर्रा ज़िंदगी के आम मामले और मसाइल के बारे में एक ऐसी किताब हो जो आदमी अपने साथ रख सके, ख़ास कर सफ़र के मौके पर ऐसी किताब साथ रहना बेहतर है।

'रोज़मर्रा के ज़रूरी मसाइल और दुआएं' के नाम से यह किताब इन्शाअल्लाह इस ज़रूरत को हर पहलू से पूरा करेगी।

पाठकों से दरख़्वास्त है कि वह इसके पढ़ने के बाद अगर किसी पहलू से कुछ बढ़ाने-घटाने की ज़रूरत महसूस करें, तो हमें तवज्जोह दिला दें, ताकि अगला एडीशन ज़्यादा बेहतर छप सके।

—अब्दुल मालिक फ़हीम

दो बातें

नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और दूसरे रोज़मर्रा के मसाइल पर यह किताब बड़ी फ़ायदेमंद कोशिश है। थोड़े में इन मसाइल को बड़े ही आसान अन्दाज़ में पेश किया गया है, जिनकी ज़रूरत आम तौर पर पड़ती रहती है।

हमारे नज़दीक चारों फ़िक़्ही मस्लक और अह्ले हदीस मस्लक बिल्कुल सही हैं और हर एक के हक़ में किताब व सुन्नत में दलीलें मौजूद हैं। इनमें से हर एक के साथ और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है।

लेकिन हमारे देश की बड़ी अक्सरीयत चूंकि हनफ़ी मस्लक की पैरवी क़र रही है, इसलिए इस किताब में सिर्फ़ हनफ़ी मस्लक और हनफ़ी फ़िक़्ह के मुताबिक़ मसाइल बयान किए गए हैं।

मौलाना मुहम्मद अब्दुल्लाह हनीफ़ साहब की यह कोशिश क़द्र के क़ाबिल है। अल्लाह और ज़्यादा तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। इस कोशिश को अल्लाह क़ुबूल फ़रमाए और मुसलमानों के लिए फ़ायदेमंद बनाए।

—आसिम नोमानी

31 मार्च 1975 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

छः कलिमे

पहला कलिमा तैयिबा

ला इला-ह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह०

(अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।)

दूसरा कलिमा शहादत

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।)

तीसरा कलिमा तम्जीद

सुबहानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०

(पाकी अल्लाह के लिए है और तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और अल्लाह ही बड़ा है और ताक़त और

क़ूवत अल्लाह ही की ओर से है, (जो) बड़ी शान और बड़ाई का मालिक है।)

चौथा कलिमा तौहीद

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व हय्युन ला यमूतु अ-ब-दन अ-ब-दा ज़ुल जलालि वल इकरामि० बियदिहिल ख़ैरु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर०

(अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं। उसकी (कुल कायनात (सृष्टि) पर) बादशाही है और उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, ज़िंदगी और मौत उसी के हाथ में है। वह (ऐसा) ज़िंदा है जिसे कभी भी मौत नहीं, अज़मत व बुज़ुर्गी का मालिक है। हर तरह की भलाई इसी के क़ब्ज़े में है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

पांचवां कलिमा इस्तग़फ़ार

अल्लाहुम-म अन-त रब्बी ला-इलाह इल्ला अन-त ख़-लक़-तनी व अना अब्दु-क व अना अला अह्दि-क वअ दि-क मस्तत अतु अअू ज़ु-बि-क मिन शर्रि मा स-नअतु अबूउ ल-क बिनिअमति-क अलय-य व अबूउ बिज़ंबी फ़ग़िफ़रली फ़-इन्नहू ला यग़िफ़रुज़-ज़ुनू-ब इल्ला अनतः०

(ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तूने मुझे पैदा किया है, मैं तेरा बन्दा (ग़ुलाम हूं)

और अपनी ताक़त के मुताबिक़ तुझसे किए हुए वायदे पर क़ायम हूं। मैं अपनी बद-अमली के शर से तेरी पनाह लेता हूं, तेरी जो नेमत मुझ पर है, उसका इक़रार करता हूं और मुझे अपने गुनाहों का भी एतराफ़ है, सो आप मुझे बख़्श दें, क्योंकि आपके सिवा गुनाह बख़्शने वाला और कोई नहीं।)

छठा कलिमा रद्दे कुफ़्र

अल्लाहु-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन अन उश्रि-क बि-क शैअन व अना आलमु बिही व अस्तग़्फ़िरु-क लिमा ला आलमु बिही तुब्तु अन्हु व तबर्रातु मिनल कुफ़्रि व श्शिर्कि व लकिज़्बि व ल ग़ीबति वल बिद अति व न नमीमति वल फ़वाहिशि वल बुहतानि वल मआसी कुल्लिहा व अस्लम्तु व अकुलू ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलल्लाह॰

(ऐ अल्लाह! मैं किसी को तेरा शरीक बनाने के गुनाह से तेरी पनाह मांगता हूं अगर यह गुनाह मुझसे जान-बूझकर हुआ और मैं तुझसे मग़्फ़िरत चाहता हूं उस गुनाह से जो अनजाने में हुआ हो। मैंने उस गुनाह से तौबा की, मैं कुफ़्र व शिर्क और झूठ व ग़ीबत और बिदअत और चुग़लख़ोरी और बेहयाई और बोहतान और तमाम गुनाहों से बेज़ार हुआ और मैंने फ़रमांबरदारी अपनाई और मैं कहता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।)

तहारत

जिस्म, कपड़े, जगह और दूसरी इस्तेमाल होने वाली चीज़ों को नजासत (नापाकी) से पाक करने को तहारत कहते हैं।

नजासत की क़िस्में

नजासत की दो क़िस्में हैं—

(1) हक़ीक़ी, (2) हक्मी।

नजासत हक़ीक़ी—वह है जो देखने में आए, जैसे पेशाब, पाख़ाना, गोबर वग़ैरह।

नजासत हक्मी—वह है जो देखने में न आए। इसकी वजह से वुज़ू या ग़ुस्ल वाजिब हो जाए, जैसे हवा का निकलना और एहतलाम वग़ैरह।

फिर नजासत हक़ीक़ी दो क़िस्म की हैं—

(1) ग़लीज़ा, (2) ख़फ़ीफ़ा।

नजासत ग़लीज़ा : ख़ून, पाख़ाना, शराब, गोबर, लीद, मुर्ग़ी, बत्तख़ और मुर्ग़ाबी की बीट। इंसान और हराम जानवरों का पेशाब भी नजासत ग़लीज़ा है।

नजासत ख़फ़ीफ़ा : परिंदों की बीट, हलाल जानवरों का पेशाब, घोड़े का पेशाब नजासत ख़फ़ीफ़ा है।

नजासत ख़फ़ीफ़ा अगर गाढ़ी और जिस्म वाली है, पाख़ाना जैसे गोबर वग़ैरह, तो उसके वज़न का लिहाज़ करना पड़ता है। अगर ऐसी नजासत साढ़े चार माशा (25

पैसे वाले सिक्के के बराबर) या उससे ज़्यादा कपड़े या जिस्म पर लग जाए और किसी मजबूरी और उज़्र की बुनियाद पर उन्हें पाक नहीं किया जा सका, तो ऐसी हालत में नमाज़ पढ़ना जायज़ है, लेकिन बग़ैर उज़्र के ऐसा करना नमाज़ को सख़्त मक्रूह कर देता है।

अगर नजासत ठोस जिस्म वाली नहीं, जैसे पेशाब, शराब वग़ैरह, तो उसके फैलाव का लिहाज़ किया जाएगा। अगर ऐसी नजासत जिस्म या कपड़े को लग गई है, अगर सवा वर्ग इंच (एक रुपए वाले सिक्के के फैलाव के बराबर) या उससे ज़्यादा है तो जिस्म और कपड़े को उससे पाक किए बग़ैर नमाज़ न होगी। अगर उसका फैलाव सवा वर्ग इंच या उससे कम है, तो ऐसी हालत में जिस्म और कपड़े को बग़ैर उज़्र के पाक न करने से नमाज़ तो हो जाएगी, लेकिन सख़्त मक्रूह होगी।

फिर भी सफ़ाई और पाकी का तक़ाज़ा यह हैं कि कपड़े और जिस्म पर जिस क़िस्म की नजासत लगी हो, चाहे थोड़ी हो या ज़्यादा, उन्हें उससे तुरन्त पाक कर लेना चाहिए।

फिर नजासत हक्मी की दो क़िस्में हैं। एक की वजह से हदसे असग़र हो जाता है, यानी इससे वुज़ू वाजिब हो जाता है। दूसरी की वजह से अकबर होता है, यानी उससे ग़ुस्ल (नहाना) वाजिब होता है।

हदस असग़र

जिन चीज़ों से वुज़ू वाजिब होता है—

1. पेशाब, पाख़ाना करना या इन दोनों रास्तों से किसी चीज़ का निकलना,

2. हवा का निकलना,

3. जिस्म के किसी हिस्से से ख़ून, पीप या किसी और मवाद का निकलना,

4. मुंह भरकर क़ै आना,

5. लेट कर या सहारा लगाकर नींद करना,

6. बेहोश हो जाना,

7. मजनून (पागल) हो जाना,

8. नमाज़ में क़हक़हा (ठट्ठा) मार कर हंसना।

हदसे अकबर

जिन चीज़ों से ग़ुस्ल वाजिब होता है—

1. एहतलाम, 2. जिमाअ, 3. शहवत के साथ मनी का निकलना, 4. हैज़ आना, 5. नफ़ास का आना।

औरतों को जो माहवारी ख़ून आता है, उसे हैज़ कहते हैं और जो बच्चा जनने के बाद ख़ून या मवाद आए उसे नफ़ास कहते हैं।

ऐसी शक्ल में कि एहतलाम का ख़्वाब याद है, लेकिन इन्ज़ाल (मनी का निकलना) न हुआ हो, तो ग़ुस्ल वाजिब नहीं है। अगर एहतलाम का ख़्वाब याद नहीं, लेकिन कपड़े या जिस्म पर मनी को पाया तो इस शक्ल में ग़ुस्ल वाजिब है।

नजासत से पाक करने के तरीक़े

ठोस नजासत से पाक करने का तरीक़ा

ऐसी नजासत जहां लगी हो, वहां से उसे खुरच डालने या ज़मीन पर रगड़ कर उसे साफ़ कर लेने से वह पलीद चीज़ पाक हो जाती है, बशर्ते कि उस चीज़ पर उस नजासत के ज़र्रे, रंग और बू बाक़ी न रहे, वरना उसे धो डालना ज़रूरी है।

जो ठोस न हो, उस नजासत से पाक करने का तरीक़ा

ऐसी नजासत जहां लगी हो, उसे वहां से तीन बार ख़ूब धो डाला जाए, यहां तक कि उसके ज़र्रे, रंग और बू बाक़ी न रहे।

कुछ नजासतें धो डालने के बावजूद भी अपना रंग नहीं छोडतीं। ऐसी नजासत को भी तीन बार धो डालने से चीज़ पाक हो जाती है जैसे ख़ून। उसका रंग देर से उतरता है, ख़ास तौर से जबकि उसे धो डालने में देर हो जाए।

जो चीज़ें निचोड़ी जा सकती हैं, जैसे कपड़ा, तो हर बार धाने के बाद उसे निचोड़ना ज़रूरी है, इतना निचोड़ा जाए कि पानी टपकना बन्द हो जाए और जो चीज़ें निचोड़ी नहीं जा सकतीं, (चटाई, तख़्ता वग़ैरह) उनका तरीक़ा यह है कि एक बार पानी से धो डाला जाए, यहां तक कि उससे पानी टपकना बन्द हो जाए, फिर पानी डाला जाए। इस तरह से

तीन बार किया जाए।

ज़मीन को नापाकी से पाक करने का तरीक़ा

अगर ज़मीन पर ठोस नजासत पड़ी हो, तो उसे हटा देने के बाद जब हवा और धूप उसके असर और बू को ख़त्म कर दे, तो वह ज़मीन पाक है, यानी ऐसी ज़मीन पर नमाज़ पढ़ना जायज़ है।

अगर नजासत ठोस न थी, जैसे पेशाब, तो ऐसी नजासत को जब हवा और धूप सुखा दे और उसकी कोई बू बाक़ी न रहे, तो वह ज़मीन पाक है, लेकिन ऐसी ज़मीन पर तयम्मुम करना जायज़ नहीं है।

अगर ज़मीन से नजासत हटाने और धूप और हवा की वजह से सूख जाने के बाद भी उस नजासत का असर मौजूद हो, तो ऐसी ज़मीन पर कुछ पानी बहा दिय जाए। सूख जाने के बाद ज़मीन पाक हो जाएगी।

तहारत से मुताल्लिक़ कुछ ज़रूरी मसाइल

1. हराम चमड़ा रंग कर लेने (दबाग़त) के बाद पाक हो जाता है।

2. तमाम फाड़ खाने वाले जानवरों और हराम परिंदों का झूटा हराम और तमाम हलाल जानवरों और परिंदों का झूटा हलाल है।

हराम जानवरों में से घोड़े, गधे और ख़च्चर का झूटा हराम नहीं। बिल्ली और शिकार करने वाले पालतू परिंदों

के मुंह पर अगर कोई नजासत न लगी हुई हो, तो उनका झूटा भी हराम नहीं है।

3. बर्तन में मौजूद जिस चीज़ को ऐसा जानवर झूटा कर जाए, जिसका झूटा हराम है, तो बरतन नापाक हो जाता है। ऐसे बरतन को पाक करने के लिए उसे तीन बार ख़ूब धोना ज़रूरी है अगर एक बार मिट्टी मल कर भी धो लिया जाए, तो बेहतर है।

4. हर इंसान का झूटा पाक है, भले ही वह काफ़िर हो या नापाकी की हालत में हो।

5. बे-वुज़ू आदमी क़ुरआन मजीद को हाथ न लगाए, अलबत्ता ज़ुबानी पढ़ और पढ़ा सकता है, हर क़िस्म की दुआ मांग सकता है, मस्जिद में भी दाख़िल हो सकता है।

6. जिस आदमी पर ग़ुस्ल वाजिब हो, वह न मस्जिद में दाख़िल हो सकता है, न क़ुरआन मजीद को हाथ लगा सकता है, न ज़ुबानी पढ़ सकता है और न पढ़ा सकता है। हाथ-मुंह धोकर खा-पी सकता है। हैज़ और नफ़ास वाली औरत का भी यही हुक्म है।

कुंएं के मसाइल

1. अगर कुंएं में ऐसा जानवर गिरकर मर जाए और फूल कर गल जाए, जिसमें बहता हुआ ख़ून हो तो कुंएं का सारा पानी निकालना ज़रूरी है, तब वह पाक होगा, चाहे वह जानवर बड़ा हो या छोटा, जैसे बकरी, मुर्ग़ी, चूहा, चिड़िया वग़ैरह।

2. अगर कुत्ते के बराबर या उससे बड़े जिस्म वाला जानवर कुंएं में गिरकर मर जाए, तब भी कुंएं का सारा पानी निकालना ज़रूरी है, चाहे वह अभी फूला और गला न हो।

3. बिल्ली के बराबर या उससे छोटे जिस्म वाला जानवर अगर कुंएं में गिर कर मर जाए, मगर फूला और गला नहीं, तो कम से कम चालीस डोल (बालटी) निकालने से कुंवां पाक हो जाता है, एहतियात के तौर पर डोल निकालने चाहिएं।

4. अगर ऐसा कुंवां नापाक हो जाए, जिसमें पानी भरता रहता है, उसका पूरी तरह ख़ाली होना मुम्किन नहीं, तो उसका पानी पहले नाप लिया जाए, फिर मिसाल के तौर पर पचास डोल निकाल कर नाप लिया जाए कि कितना कम हुआ, फिर हिसाब लगाया जाए कि उस वक़्त यानी पानी निकालते वक़्त उसमें कितने डोल पानी था, फिर इतने डोल पानी निकाल लिया जाए, बस कुंवा पाक है।

5. जिस रस्से और डोल से पानी निकाला गया उसे पाक करने की ज़रूरत नहीं। वह अपने आप इतना पानी निकालने की वजह से पाक हो जाता है।

लेकिन सिर्फ़ पानी निकालने से कुंवा पाक न होगा, जब तक वह चीज़ न निकाली जाए जिससे कुंवा नापाक हुआ था।

वुज़ू करने का मस्नून तरीक़ा

1. तीन बार हाथ धोना, 2. तीन बार कुल्ली और मिस्वाक करना, 3. तीन बार नाक में पानी देना, 4. तीन बार मुंह धोना, (सर के बालों से लेकर ठोढ़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक) 5. तीन बार दायां हाथ और तीन बार बायां हाथ कुहनियों समेत धोना, 6. एक बार पूरे सर का मसह करना, 7. तीन-तीन बार दायां और बायां पांव टख़ने तक धोना।

वुज़ू के शुरू में यह दुआ पढ़ी जाए—

बिस्मिल्लाहिल अज़ीम वलहम्दु लिल्लाहि अला दीनिल इस्लामि अल-इस्लामु हक़्क़ुव वल कुफ्रु बातिल०

यह याद न हो तो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० पढ़ लेना भी काफ़ी है। मुंह धोते वक़्त कलिमा शहादत पढ़ना चाहिए और वुज़ू के आख़िर में यह दुआ पढ़नी चाहिए—

अल्लाहुम-मज-अलनी मिनत्तव्वा बी-न वज अलनी मिनल मु-त-तह्हिरीन सुब-हा-न-क ल्लाहु-म व बिहम्दि-क अशहदू अल्ला इला-ह इल्ला अन-त अस्तग़िफ़रु-क व अतूबु इलै-क०

(1) वुज़ू में हर अंग को तीन बार धोना मस्नून है और इसी तरह सारे सर का मसह करना मस्नून है।

(2) नाख़ूनों में अगर आटा घुसा हुआ है, तो उसे निकाले बग़ैर वुज़ू मुकम्मल न होगा।

(3) इसी तरह अगर नाख़ूनों पर पालिश है तो वुज़ू न

होगा, जब तक उसे खुरच कर उतार न दिया जाए, क्योंकि उसके अन्दर पानी सूख नहीं सकता।

ग़रज़ इन अंगों में से किसी अंग पर जिन्हें वुज़ू में या ग़ुस्ल में धोना ज़रूरी है, कोई ऐसी चीज़ लगी हो, जिसमें पानी न सूख सकता हो, तो वुज़ू और ग़ुस्ल मुकम्मल न होगा।

ग़ुस्ल का मस्नून तरीक़ा

1. पहले इस्तिंजा किया जाए,

2. फिर मस्नून तरीक़े के मुताबिक़ वुज़ू किया जाए

3. अगर (रोज़ा) न हो तो कुल्ली करने में ज़्यादती की जाए, यानी ग़रग़रे के साथ कुल्लीं की जाए और अच्छी तरह नाक में पानी पहुंचाया जाए।

4. फिर पूरे जिस्म पर पानी बहा कर जिस्म को हाथ से मला जाए ताकि कोई जगह सूखी न रह जाए। इसी तरह तीन बार किया जाए।

तयम्मुम करने का तरीक़ा और उसके मसाइल

अगर वुज़ू या ग़ुस्ल के लिए पानी न मिले, तो तयम्मुम करना चाहिए। यह वुज़ू और ग़ुस्ल का बदल है। पानी न मिलने का मतलब यह है कि—

1. नमाज़ का वक़्त हो चुका है, पानी लगभग सवा मील दूर है। पानी तक पहुंचने में नमाज़ का वक़्त निकल जाने का ख़तरा है।

2. आदमी जंगल में खड़ा है, उसे मालूम नहीं कि पानी कहां है।

3. या कुंवां मौजूद है, लेकिन पानी निकालने का कोई सामान नहीं है।

4. या पानी क़ीमत से मिलता है और ख़रीदने की ताक़त नहीं है।

इसके अलावा नीचे लिखी शक्लों में भी तयम्मुम किया जा सकता है—

1. पानी मौजूद है, लेकिन बीमारी की वजह से इस्तेमाल नहीं कर सकता।

2. या कड़ी सर्दी है और इस बात का डर है कि अगर पानी इस्तेमाल किया गया तो ज़िंदगी ख़तरे में पड़ सकती है।

3. या ऐसी नमाज़ छूट जाने का ख़तरा है, जिसका और कोई बदल नहीं, जैसे ईदों की नमाज़, ग़ैर वली के लिए जनाज़े की नमाज़।

इन तमाम शक्लों में पानी मिलने के बावजूद भी तयम्मुम जायज़ है।

तयम्मुम में तीन चीज़ें ज़रूरी हैं—

1. तयम्मुम की नीयत,

2. ज़मीन पर दोनों हाथ एक बार मारकर, झाड़कर फिर उन्हें मुंह पर अच्छी तरह फेर देना।

3. फिर दूसरी बार ज़मीन पर हाथ मारकर बाएं हाथ को पूरे दाएं बाज़ू पर कुहनी समेत फेर देना और दाएं हाथ को पूरे बाएं बाज़ू पर कुहनी समेत फेर देना।

बस तयम्मुम हो गया।

तयम्मुम जिन चीज़ों पर करना जायज़ है

1. मिट्टी,

2. पत्थर,

3. चूना और उनसे बनी हुई तमाम चीज़ें, चाहे वे पक्की हों या कच्ची।

तयम्मुम को तोड़ने वाली चीज़ें

1. जिन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है, उनका बयान हदसे असग़र में गुज़र चुका है। उन्हीं से तयम्मुम भी टूट जाता है।

2. इसके अलावा पानी का मिल जाना भी तयम्मुम को तोड़ देता है। लेकिन तयम्मुम के साथ आदमी जो इबादतें कर चुका है, उनके दोहराने की ज़रूरत नहीं।

मोज़ों और जुराबों पर मसह का तरीक़ा

1. अगर आदमी मुसाफ़िर है तो वह मोज़ों और जुराबों पर तीन दिन और तीन रातें यानी 72 घंटे जब वुज़ू के वक़्त पैरों को धोने की ज़रूरत पड़े, सिर्फ़ उन पर मसह कर सकता है।

2. अगर आदमी मुक़ीम है, तो एक दिन और एक रात उन पर मसह कर सकता है।

3. मोज़ों और जुराबों पर मसह करने के लिए ज़रूरी है कि वह वुज़ू करके पांव धोकर पहनी गई हो, वरना उन पर मसह जायज़ नहीं।

4. मसह का वक़्त पहला वुज़ू टूटने के बाद दूसरा वुज़ू करने के वक़्त से शुरू होगा।

5. अगर मोज़े या जुराबें तीन उंगुल यानी दो इंच के

बराबर फटी हुई हों, तो उन पर मसह जायज़ नहीं है।

6. अगर मुद्दत के अन्दर दोनों मोज़ों या जुराबों में या इनमें से किसी एक में पानी घुस जाए तो पांव का धोना वाजिब हो जाएगा।

7. अगर पांव अपनी जगह से निकल कर मोज़े या जुराब की पिंडुली वाली जगह पर आ जाए तब भी पांव धोना वाजिब है यानी मोज़े या जुराबें इतनी ढीली होकर ढलक जाएं।

8. मसह करने का तरीक़ा यह है कि कम से कम तीन उंगलियां पानी में तर करके पांव के पीछे की तरफ़ पैरों की उंगलियों पर रखकर उन्हें ऊपर के पिंडलियों की ओर खींचा जाए, टख़ने नीचे रह जाएं और मसह वाला हाथ कुछ ऊपर चला जाए।

पट्टी और लकड़ी की फट्टियों पर मसह

1. किसी चोट पर पट्टी या किसी टूटी हुई हड्डी पर लकड़ी वग़ैरह की फट्टियां बंधी हुई हों या पलस्तर चढ़ा हुआ हो और उनका खोलना नुक़्सानदेह हो तो उन पर बे-मुक़र्रर मीयाद मसह करना दुरुस्त है।

2. उन पर मसह का तरीक़ा यह है कि हाथ की उंगलियां भिगो कर उन पर फेर ली जाएं।

मैयत के ग़ुस्ल का मस्नून तरीक़ा

ज़रूरत के मुताबिक़ बेरी के पत्ते पानी में उबाल लिए

जाएं, फिर जितना पानी ग़ुस्ल के लिए काफ़ी हो सकता है, सब में वह पानी मिला लिया जाए, फिर मैयत को एक तख़्ते पर लिटा दिया जाए, फिर उसके जिस्म के कपड़े उतार लिए जाएं मगर बड़ी सावधानी और नर्मी के साथ, क़मीज़ उतारने में थोड़ी परेशानी होती है, इसलिए उसे फाड़ कर उतारा जाए। फिर मैयत के पेट पर धीरे-धीरे हाथ फेरा जाए, ताकि पेट में जो गन्दगी हो, बाहर आ जाए, फिर उसका इस्तिंजा कर लिया जाए। फिर रूई पानी में तर करके धीरे-धीरे नथनों, कानों और मुंह में फंसा दी जाए ताकि नहलाते वक़्त पानी इन सूराख़ों में न चला जाए। बालों को साबुन वग़ैरह से धो लिया जाए, फिर मैयत को पहले बाएं पहलू पर लिटा कर दायां पहलू ख़ूब धो लिया जाए, फिर दाएं पहलू पर लिटा कर बायां पहलू धो लिया जाए। इसी तरह सारे जिस्म पर पानी डाला जाए और धीरे-धीरे जिस्म को पानी डालते वक़्त मलते रहना चाहिए ताकि कोई जगह सूखी न रह जाए। ग़ुस्ल करते वक़्त मैयत पर एक चादर (सतर ढांकने के लिए) डाल दी जाए, ताकि बेपरदगी न हो।

नमाज़ के मसाइल

पांच वक़्त की नमाज़ें

फ़ज्र—फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त सुबह सादिक़ (पौ फटने) से लेकर सूरज निकलने से पहले तक है।

ज़ुहर—ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त दोपहर के बाद ज़वाल (सूरज ढलने) से लेकर दो मिस्ल के बराबर साया आ जाने तक है।

अस्र—अस्र की नमाज़ का वक़्त दो मिस्ल साया से लेकर सूरज डूबने से पहले तक है।

मग़्रिब—मग़्रिब की नमाज़ का वक़्त सूरज डूबने से लेकर शफ़क़ (लाली) के ग़ायब होने तक है। शफ़क़ से मुराद सूरज डूबने के बाद आसमान के पश्चिमी किनारे पर जो लाली और सफ़ेदी कुछ देर तक बाक़ी रहती है।

इशा—इशा की नमाज़ का वक़्त शफ़क़ के ग़ायब होने और अच्छी तरह अंधेरा छा जाने से शुरू होकर सुबह सादिक़ तक है। शुरू में दर्ज चार नमाज़ों को शुरू वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल है और आख़िरी नमाज़ के तिहाई रात तक देर करके पढ़ना अफ़ज़ल है।

अज़ान

1. जब किसी नमाज़ का वक़्त शुरू होने लगे, तो उस वक़्त अज़ान कही जाए।

2. वक़्त से पहले अगर कभी अज़ान दी गई हो, तो हनफ़ियों के नज़दीक उसका दोहराना ज़रूरी है।

3. मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) क़िबला रुख़ होकर, अगर मुम्किन हो तो ऊंची जगह पर खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से नीचे लिखे शब्द कहे—

अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर

(अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।)

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु॰ अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।)

अश्हदु अन-न मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह॰ अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह॰

(मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ अल्लाह के रसूल हैं। मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ अल्लाह के रसूल हैं।)

हय-य अलस्सला: हय-य अलस्सला:॰

(आओ नमाज़ की ओर, आओ नमाज़ की ओर)

हय-य अलल फ़लाह हय-य अलल फ़लाह॰

(आओ कामियाबी की ओर, आओ कामियाबी की ओर)

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर

(अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है)

ला इला-ह इल्लल्लाहु

(अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं)

फ़ज्र की अज़ान में हय-य अलल फलाह के बाद दो बार—

अस्सलातु ख़ैरुम मिनन नौमि *(नमाज़ नींद से बेहतर है)* कहा जाता है।

इक़ामत

जब जमाअत फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के लिए खड़ी हो, तो इमाम के मुसल्ला पर आने के बाद एक आदमी जोर से, लेकिन अज़ान से कम आवाज़ में वही शब्द कहे, जो अज़ान के शब्द हैं, सिर्फ़ 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद 'क़द क़ामतिस्सला:' (नमाज़ खड़ी हो गई) दो बार बढ़ा दे।

पांचों वक़्त नमाज़ की रक्अतें

फ़ज्र की नमाज़—1. दो रक्अत सुन्नत मुअक्कदा (ताकीदी), 2. दो रक्अत फ़र्ज़।

ज़ुह्र की नमाज़—1. चार रक्अत सुन्नत मुअक्कदा, 2. चार रक्अत फ़र्ज़, 3. दो रक्अत सुन्नत मुअक्कदा, 4. दो रक्अत नफ़्ल।

अस्र की नमाज़—1. चार रक्अत सुन्नत ग़ैर मुअक्कदा, 2. चार रक्अत फ़र्ज़।

मग़्रिब की नमाज़—1. तीन रक्अत फ़र्ज़, 2. दो रक्अत सुन्नत मुअक्कदा, 3. दो रक्अत नफ़्ल।

इशा की नमाज़—1. चार रक्अत सुन्नत ग़ैर मुअक्कदा, 2. चार रक्अत फ़र्ज़, 3. दो रक्अत सुन्नत मुअक्कदा, 4. दो रक्अत नफ़्ल, 5. तीन रक्अत वित्र वाजिब, 6. दो रक्अत नफ़्ल।

1. फ़र्ज़ व वाजिब—फ़र्ज़ और वाजिब वह होता है, जिसे किसी हाल में छोड़ना जायज़ नहीं।

2. सुन्नत मुअक्कदा—सुन्नत मुअक्कदा वह है जिसकी हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ताकीद फ़रमाई है, लेकिन ज़रूरत और मजबूरी की हालत में उसे छोड़ा जा सकता है, जैसे सफ़र की हालत में।

3. सुन्नत ग़ैर मुअक्कदा और नफ़्ल—सुन्नत ग़ैर मुअक्कदा और नफ़्ल वह है जिसे पढ़ने और न पढ़ने का अख़्तियार आदमी को हासिल है। पढ़ेगा तो सवाब होगा, न पढ़ेगा, तो कोई पकड़ न होगी।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

दो रक्अतों वाली नमाज़ का तरीक़ा, जब आदमी अकेला हो, इस तरह है—

1. नीयत—जो नमाज़ अदा करनी हो, उसकी नीयत करे। ज़ुबान से नीयत के शब्दों का अदा करना ज़रूरी नहीं, दिल में ख़्याल कर लेना काफ़ी है, अलबत्ता नीयत के बाद इन शब्दों का कहना मस्नून है—

इन्नी वज्जहतु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावति वल-अरज़ि हनीफ़ंव-व माअना मिनल मुश्रिकीन०

(बेशक मैंने अपना मुंह उस ज़ात की ओर कर लिया जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। मैं यकसू हो गया हूं और मुश्रिकों में से नहीं हूं।)

2. **तक्बीरे तहरीमा**—यानी अल्लाहु अक्बर कहकर दोनों हाथ कानों तक उठाना, फिर पेट पर इस तरह बांधना कि बाएं हाथ की हथेली नीचे हो और दाएं की ऊपर। औरत सीने पर हाथ बांधे और नीयत के वक़्त कंधे के बराबर हाथ उठाए।

3. **सना पढ़ना**—यानी 'सुब हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क व त बा-र-कस्मु-क व तआला जद्दु-क व ला इला-ह ग़ैरुक०'

(ऐ अल्लाह ! तेरी ज़ात (तमाम ऐबों से) पाक है और तारीफ़ के लायक़ है और तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी शान ऊंची है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।)

4. **तअव्वुज़ पढ़ना**—'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता-निर्रजीम०' (मैं अल्लाह की पनाह में आता हूं मर्दूद शैतान से)

5. **तस्मिया पढ़ना**—'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०' (शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो (बेहद) मेहरबान और रहनम करने वाला है)

6. **सूरः फ़ातिहा**—'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० अर-रहमानिरहीम मालिकि यौमिद्दीन ईया-क नअबुदु व ईया-क नस्तईन इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम

सिरातल्लज़ी-न अन-अम-त अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन॰ (आमीन)

(सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम दुनियाओं का, जो बेहद मेहरबान और रहम करने वाला है। फ़ैसले के दिन (क़ियामत) का मालिक है। (ऐ अल्लाह ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। (ऐ अल्लाह !) हमें सीधा रास्ता दिखा, जो उन लोगों का रास्ता है, जिन पर तूने इनाम किया, न उन पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ और न वे गुमराह हुए।'

7. क़ुरआन मजीद का कुछ हिस्सा पढ़ना—हम यहां छोटी-छोटी सूरतें आसानी के लिए नक़ल करते हैं—

(क) वल-अस्रि इन्नल इन्सा-न लफ़ी ख़ुसरि इल्लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व-त-वासौ बिल हक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्रि॰ (सूरः अस्र)

(ज़माना गवाह है कि इंसान हमेशा घाटे में रहा है, सिवाए उन इंसानों के जो ईमान लाए और जिन्होंने भले काम किए और एक दूसरे को हक़ बात कहते रहे और एक दूसरे को सब्र पर उभारते रहे।)

(ख) क़ुल हुवल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद व लम यूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अह्द॰

(ऐ मुहम्मद ! कह दो कि अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज़ है, न उससे कोई पैदा हुआ और न व किसी से पैदा हुआ और कोई भी उसका हमसर (उसके बराबर का) नहीं।)

8. रुकूअ करना—क़ुरआन मजीद का कुछ हिस्सा पढ़ लेने के बाद रुकूअ करे यानी अपने दोनों हाथ अपने घुटनों पर रखे और रुकूअ की हालत में कमर को सीधा रखने की कोशिश करे, फिर रुकूअ की हालत में क़म से कम तीन बार ये शब्द पढ़े—

'सुब हा-न रब्बियल अज़ीम०' (पाक है मेरा रब, बुज़ुर्गी वाला)

9. क़ियाम करना—फिर खड़ा हो जाए और कहे—

'समिअल्लाहु लिमन हमिदह' *(सुन ली और अल्लाह ने उसकी (बात) जिसने उसकी प्रशंसा की)*

फिर कहे, 'रब्बना लकल हम्द' *(ऐ हमार रब ! सारी तारीफ़ें तेरे ही लिए हैं।)*

अगर साथ ही ये शब्द बढ़ा दे तो ज़्यादा सवाब की वजह बनेगा—

'हम्दन कसीरन तय्यिबम मुबारकन फ़ीहि०' *(बहुत ज़्यादा तारीफ़ें जो पाकीज़ा और बरकत वाली हैं)*

10. सज्दा करना—फिर सज्दे में चला जाए। सज्दा करते वक़्त रानें सीधी रहे, बाज़ू पहलू से दूर रहें, मुंह दोनों हाथों के दर्मियान हो, माथा और नाक लाज़मी तौर पर ज़मीन या सफ़ वग़ैरह पर लगे, फिर कम से कम तीन बार पढ़े—

'सुब हा-न रब्बियल आला' (पाक है मेरा रब बुलन्द व बरतर)

फिर सज्दे से उठ कर बैठ जाए। बैठते वक़्त इस बात

का ख़्याल रखे कि दायां पांव खड़ा रहे और बाएं पांव को बिछाकर उस पर बैठ जाए और हाथ दोनों रानों पर रख दे, फिर पढ़े—

'अल्लाहुम मग़्फ़िर ली वर्हम्नी वह्दिनी व आफ़िनी वर्ज़ुक़नी'

(ऐ मेरे अल्लाह ! मुझे बख़्श दे, मुझे बख़्श दे, मेरे ऊपर रहम फ़रमा, मुझे हिदायत नसीब फ़रमा, मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और मुझे रोज़ी दे।)

फिर दूसरा सज्दा करे जिस तरह कि पहला सज्दा किया था।

11. दूसरी रक्अत—फिर खड़ा हो जाए और दूसरी रक्अत बिस्मिल्लाह से शुरू करे और बाक़ी सब कुछ उसी तरह पढ़े और करे जिस तरह पहली रक्अत में किया था।

12. क़ादा—फिर दो सज्दे करने के बाद बैठ जाए, जिस तरह दो सज्दों के दर्मियान बैठा था, फिर पढ़े—

'अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलैक- अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा-लिहीन व अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०'

(तमाम सलामतियां, हमारी नमाज़ें और सारी पाकीज़ा बातें अल्लाह के लिए हैं, सलाम आप पर ऐ अल्लाह के नबी ! और अल्लाह की रहमतें और बरकतें। सलामती हो हम पर और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर और मैं गवाही

देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।)

शब्द 'अल ला इला-ह' पर शहादत की उंगली उठाना और इल्लल्लाह पर नीचे वापस कर देना मस्नून है।

13. दरूद शरीफ़—फिर पढ़े—

'अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिवं व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राहीम इन्न-क हमीदुम मजीद०'

(ऐ अल्लाह! रहमत फ़रमा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल (सन्तान) पर, जिस तरह तूने रहमत फ़रमाई इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और उनकी आल पर। यक़ीनन तू बेहतरीन गुणों वाला और शान वाला है।)

14. फिर पढ़े—'अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिवंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद०'

(ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल (सन्तान) पर जिस तरह कि बरकत नाज़िल फ़रमाई तूने हज़रत इब्राहीम पर और उनकी आल पर। यक़ीनन तू बेहतरीन सिफ़तों वाला और शान वाला है।

15. दुआ—फिर जो दुआ याद हो, पढ़े। हम यहां दो दुआएं नक़ल करते हैं। दोनों में से कोई एक पढ़े—

(क) रब्बिज अलनी मुक़ीमस्सलाति व मिन ज़ुर्रीयती रब्बना व त-क़ब्बल दुआइ-अ रब्बनग़्फ़िर ली व लिवालिदय-य व लिल मुअमिनी-न यौ-म यक़ूमुल हिसाब०

(ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना। ऐ हमारे रब ! (हमारी) दुआ क़ुबूल फ़रमा। ऐ पर वरदिगार हमारे ! मुझे, मेरे मां-बाप, और तमाम मोमिनों को बख़्श देना जिस दिन कि हिसाब किया जाए।)

(ख) 'अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव-व ला यग़्फ़िरुज़-ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग़्फ़िरली मग़्फ़-र-तम मिन अिन्दि-क व र्हमनी इन्न-क अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम०'

(ऐ मेरे अल्लाह ! मैंने अपने ऊपर बहुत ज़ुल्म किए हैं और नहीं कोई माफ़ कर सकता गुनाहों को सिवा तेरे, पस मुझे अपनी ख़ास नवाज़िश से बख़्श दे और मेरे ऊपर रहम फ़रमा, यक़ीनन तू बख़्शने वाला मेहरबान है।)

16. सलाम—फिर दाईं तरफ़ मुंह करके, फिर बाईं ओर मुंह करके कहे—

'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि' *(तुमपर सलामती और ख़ुदा की रहमत हो)*

दो रक्अत वाली नमाज़े ऐसी ही पढ़ी जाएंगी, चाहे वे फ़र्ज़ हों या सुन्नते मुअक्कदा हों या नफ़्ल वग़ैरह।

अगर चार रक्अतों वाली नमाज़ पढ़नी है, तो देखा जाए वह कौन-सी नमाज़ है, फ़र्ज़ हैं, सुन्नते मुअक्कदा हैं या

ग़ैर मुअक्कदा हैं या नफ़्ल वग़ैरह हैं।

अगर वे फ़र्ज़ है, तो पहली दो रक्अतें इस तरह पढ़े जिस तरह हम लिख आए हैं, लेकिन पहली 'अत्तहीयात' में सिर्फ़ 'अब्दुहू व रसूलुहू' तक पढ़े, फिर 'अल्लाहु अक्बर' कहकर खड़ा हो जाए, फिर बाक़ी दो रक्अतें पहली दो रक्अतों की तरह पढ़े, लेकिन उनमें सूरः फ़ातिहा (अल-हम्दु) के बाद कोई सूरः साथ न मिलाए और दूसरी (अत्तहीयात) उसी तरह पूरी पढ़े, जिस तरह हम लिख आए हैं। यानी अत्तहीयातु, दरूद और दुआ।

अगर वे सुन्नते मुअक्कदा हैं या ग़ैर मुअक्कदा या नफ़्ल तो आख़री दो रक्अतों में भी सूरः फ़ातिहा (अल-हम्द) के साथ कोई और सूरः या तीन आयतें मिलाए।

तीन फ़र्ज़ पढ़ने का तरीक़ा

1. अगर तीन फ़र्ज़ पढ़ना मक़्सूद हों, जैसे मग़्रिब के फ़र्ज़, तो पहली दो रक्अत इस तरह अदा करनी होंगी जिस तरह हम दो रक्अत वाली नमाज़ अदा करने के तरीक़े में लिख आए हैं। लेकिन थोड़ा-सा फ़र्क़ है, वह यह कि 'अत्तहीयात' सिर्फ़ 'अब्दुहू व रसूलुहू' तक पढ़े और फिर तीसरी रक्अत के लिए खड़ा हो जाए।

2. तीसरी रक्अत में 'बिस्मिल्लाह' और सिर्फ़ 'अलहम्दु शरीफ़' (सूरः फ़ातिहा) पढ़कर रुकूअ में चला जाए। रुकूअ और दोनों सज्दों से फ़ारिग़ होकर अत्तहीयात पर बैठ जाए। अत्तहीयात, दरूद और दुआ पढ़कर सलाम फेर दे।

तीन वित्र अदा करने का तरीक़ा

ये भी मग़िरब के तीन फ़र्ज़ों की तरह अदा किए जाते हैं, लेकिन थोड़ा सा फ़र्क़ है, वह यह कि—

1. तीसरी रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद यहां कोई सूरः ज़रूर पढ़े, जबकि मग़िरब की तीसरी रक्अत में सिर्फ़ सूरः फ़ातिहा पढ़ी जाती है।

2. फिर सूरः पढ़ चुकने के बाद रुकूअ में जाने से पहले अल्लाहु अक्बर कहकर कानों तक हाथ भी उठाए, फिर हाथ बांधकर 'दुआए क़ुनूत' पढ़े। फिर रुकूअ करे और नमाज़ पूरी करे।

दुआ-ए-क़ुनूत

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तऔनु-क व नस्तह्दिउ-क व नस्तग़्फ़िरु-क व नुआमिन बि-क व न-त-वक्कलु अलै-क व नुस्नी अलैकल ख़ै-र व नश्कुरु-क व ला नक्फ़ुरु-क व नख़्लउ व नतरुकु मंय्यफ्जुरुक अल्लाहुम-म ईया-क नअबुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नसआ व नह्फ़िदु व नरजू रह-म-त-क व नख़्शा अज़ा-ब-क इन-न अज़ा-ब-क बिलकुफ़्फ़ारि मुलहिक़०'

(ऐ अल्लाह! हम तुझसे मदद मांगते हैं और तुझसे हिदायत तलब करते हैं और तुझसे गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं, तेरे ही ऊपर भरोसा करते हैं और हम सारी तारीफ़ें तेरे ही लिए ख़ास करते हैं और हम

तेरा शुक्र अदा करते हैं, नाशुक्री नहीं करते। हम हर उस आदमी को छोड़ देंगे और उससे ताल्लुक़ काट देंगे, जो तेरा नाफ़रमान हो। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ अदा करते हैं और तुझ ही को सज्दा करते हैं और हमारी सारी कोशिशें और दौड़-धूप तेरी ही ख़ुश्नूदी के लिए है। हम तेरी रहमत के उम्मीदवार हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं। यक़ीनन तेरा अज़ाब ऐसे लोगों पर पड़ेगा जो काफ़िर हैं।)

जमाअत के साथ नमाज़

1. पांच वक़्त नमाज़ों में सिर्फ़ फ़र्ज़ जमाअत के साथ अदा किए जाते हैं, बाक़ी नमाज़ अकेले अदा करना होती है।

2. वित्र की नमाज़ तमाम साल अकेले पढ़ी जाती है, सिर्फ़ रमज़ान के महीने में जमाअत के साथ अदा की जाती है।

3. नफ़्ल हमेशा अकेले अदा करना चाहिए, सिवाए तरावीह के।

नमाज़ें जो जमाअत से अदा की जाती हैं, उनकी दो क़िस्में हैं—

एक को **जहरी** कहते हैं,

दूसरी को **सिर्री** कहते हैं।

जहरी नमाज़ वह होती है जिसमें इमाम ऊंची आवाज़ के साथ क़िरात करता है, जैसे फ़ज्र के दो फ़र्ज़।

सिर्री नमाज़ वह होती है, जिसमें इमाम धीरे से क़िरात करता है, जैसे ज़ुहर के चार फ़र्ज़।

फ़ज्र की नमाज़ के दो फ़र्ज़

1. इक़ामत कहे जाने के बाद फ़ौरन इमाम ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहे और मुक़्तदी धीरे से अल्लाहु अक्बर कहें।

2. फिर इमाम और मुक़्तदी धीरे से 'सुबहा-न-कल्लाहुम.... व ला इला-ह ग़ै-रु-क तक पढ़ें।

3. फिर इमाम अऊज़ु बिल्लाहि पूरी बिस्मिल्लाहि पूरी धीरे से कहे और मुक़्तदी चुप रहें।

4. फिर इमाम ऊंची आवाज़ से सूरः फ़ातिहा यानी अल-हम्दु शरीफ़ पढ़े, जब वह वलज़्ज़ाल्लीन पर पहुंचे तो उसके बाद इमाम और मुक़्तदी धीरे से 'आमीन' कहें।

5. फिर सिर्फ़ इमाम ऊंची आवाज़ से कोई सूरः या कुछ आयतें पढ़े।

6. फिर इमाम ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहकर रुकूअ में जाए, इमाम और मुक़्तदी दोनों 'सुब हा-न रब्बियल अज़ीम' कम से कम तीन बार पढ़ें।

7. फिर इमाम रुकूअ से उठते वक़्त ऊंची आवाज़ से 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह' कहे और मुक़्तदी धीरे से 'रब्बना लकल हम्दु' कहें, अगर मौक़ा हो तो हमदन कसीरन तौयेबन मुबारकन फ़ीहि पढ़ें।

8. फिर इमाम ऊंची आवाज़ से तक्बीर कहकर सज्दे में

जाए और मुक़्तदी धीरे से अल्लाहु अक्बर कहे, फिर इमाम और मुक़्तदी दोनों 'सुब हा-न रब्बियल आला' कम से कम तीन बार धीरे से पढ़ें।

9. फिर इमाम ऊंची आवाज़ से तक्बीर कहकर उठ बैठे और मुक़्तदी धीरे से अल्लाहु अक्बर कहकर उठ बैठें। फिर इमाम और मुक़्तदी धीरे से पढ़ें—

'अल्लाहुम्मग़्फ़िरली वर्हम्नी वर्ज़ुक़्नी वह्दिनी व आफ़िनी'

10. फिर इमाम और मुक़्तदी पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करें।

11. फिर इमाम ऊंची आवाज़ से और मुक़्तदी धीरे से तक्बीर कहकर दूसरी रक्अत के लिए खड़े हो जाएं।

12. फिर इमाम पहले धीरे से बिस्मिल्लाह पढ़े।

13. फिर बाक़ी अमल इस तरह करे जिस तरह पहली रक्अत में किया था।

14. फिर इमाम और मुक़्तदी दोनों धीरे से 'अत्तहीयात', दरूद और दुआ पढ़ें।

15. फिर इमाम ऊंची आवाज़ से सलाम फेरे और मुक़्तदी धीरे से 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि कहकर सलाम फेर दें।

ज़ुहर की चार फ़र्ज़

इनमें इमाम क़िरात धीरे से पढ़ेगा, जिस तरह कोई अकेला आदमी पढ़ता है। सिर्फ़ तक्बीरें, 'समिअल्लाहु

लिमन हमिदह' और सलाम ज़ोर से कहेगा। मुक़्तदी सारा अमल इस तरह करेंगे कि जिस तरह उन्होंने फ़ज्र के दो फ़र्ज़ों में किया था यानी पहली रक्अत में सिर्फ़ 'सुब हा-न-कल्ला हुम-म' पढ़कर चुप हो जाएंगे, बाक़ी इस तरह करें, जिस तरह हम लिख आए हैं।

अस्र के चार फ़र्ज़

ये ज़ुहर के चार फ़र्ज़ों की तरह अदा किए जाएं।

मग़्रिब के तीन फ़र्ज़

पहली दो रक्अतें फ़ज्र की दो रक्अतों की तरह अदा की जाएंगी और तीसरी रक्अत ज़ुहर के फ़र्ज़ों की तीसरी रक्अत की तरह यानी पहली दो रक्अत में गहरी क़िरात करेगा और तीसरी रक्अत सिर्री होगी।

पहली अत्तहीयात इमाम और मुक़्तदी सिर्फ़ 'अब्दुहू व रसूलुहू' तक पढ़ेंगे।

इशा के चार फ़र्ज़

पहली दो रक्अतें फ़ज्र की नमाज़ की तरह और दूसरी दो रक्अतें ज़ुहर की नमाज की दूसरी दो रक्अतों की तरह अदा की जाएंगी।

मस्बूक़ की नमाज़

मस्बूक़ उस नमाज़ी को कहते है। जो जमाअत में उस

वक़्त शामिल हुआ, जब इमाम कुछ रक्अतें पढ़ चुका था या किसी रक्अत का कुछ हिस्सा पढ़ा जा चुका था, ऐसे नमाज़ी के लिए नीचे लिखी शक्लें होंगी—

1. जिस रक्अत के रुकूअ में इमाम के सर उठाने से पहले शामिल होगा, वह पूरी रक्अत अदा समझी जाएगी, उसके दोबारा अदा करने की ज़रूरत नहीं। इसके बाद अगर शरीक हो, जैसे इमाम रुकूअ से सर उठाकर खड़ा हो चुका हो या सज्दे में चला गया हो वग़ैरह तो उस हालत की शिर्कत उस रक्अत की अदाएगी की जगह ले सकेगी।

2. मस्बूक़ को अपनी छूटी हुई रक्अतें मुन्फ़रिद की तरह अदा करनी होंगी। मुन्फ़रिद की तरह मतलब यह है कि गोया वह अकेले और नए सिरे से नमाज़ अदा कर रहा है। जैसे—

अगर पहली रक्अत जाती रहे, तो इमाम के सलाम फेरने पर मस्बूक़ सलाम नहीं फेरेगा, बल्कि खड़ा हो जाएगा और 'सुब हा-न-कल्ला हुम-म से अपनी छूटी रक्अत की शुरुआत करेगा, फिर बैठकर 'अत्तहीयात' वग़ैरह पढ़कर और सलाम फेरकर नमाज़ पूरी करेगा।

अगर दो रक्अत छूट गईं, तो छूटी हुई दो रक्अत ऐसे अदा करेगा जैसे कि वह अब नमाज़ शुरू कर रहा है यानी पहली रक्अत में सुब-हा-न-कल्ला हुम-म से शुरू करेगा और हर दो रक्अत में अलहम्दु के बाद सूरः पढ़ेगा, फिर दो रक्अत के क़ादा पर बैठेगा और 'अत्तहीयात' वग़ै रह पढ़कर सलाम फेरकर नमाज़ मुकम्मल करेगा।

3. अगर तीन रक्अतें छूट गईं तो पहली रक्अत 'सुब हा-न कल्ला हुम-म' से शुरू करेगा। इस पहली रक्अत को पूरा करने के बाद क़ादा पर बैठ जाएगा, इसी तरह एक रक्अत इमाम के साथ अदा शुदा और एक यह मिलकर दो बन जाएंगी। फिर अत्तहीयात वग़ैरह पढ़कर खड़ा हो जाएगा और छूटी हुई दूसरी रक्अत अलहम्दु से शुरू करेगा। इसमें सूरः पढ़े फिर दोनों सज्दे करने के बाद खड़ा हो जाए और छूटी हुई तीसरी रक्अत में सिर्फ़ अलहम्दु शरीफ़ पढ़ेगा, सूरः नहीं मिलाएगा। इसमें दोनों सज्दों के बाद क़ादा में बैठ कर अत्तहीयात वग़ैरह पढ़कर सलाम फेर देगा। इसी तरह चार रक्अतें मुकम्मल हो जाएंगी।

4. मग़िरब की नमाज़ में अगर एक आदमी पहले क़ादे में आकर जमाअत में शरीक हुआ, तो वह दूसरे क़ादे में इमाम के सलाम फेरने के बाद ख़ुद सलाम फेरे बग़ैर खड़ा हो जाएगा। सुब हा-न-कल्लाहुम-म से रक्अत की शुरुआत करेगा। फ़ातिहा और सूरः पढ़कर रुकूअ और दो सज्दे करके क़ादा करेगा, अत्तहीयात पढ़ेगा, फिर खड़ा हो जाएगा और दूसरी रक्अत में अलहम्दु और सूरः पढ़ने के बाद रुकू और सज्दे करके फिर क़ादे पर बैठ जाएगा। इसमें अत्तहीयात वग़ैरह पढ़कर सलाम फेर देगा। इस तरह उसे चार बार क़ादा करना पड़ेगा।

5. ईद की नमाज़ की छूटी हुई रक्अतों की अदाएगी का तरीक़ा यही है जो हमने फ़र्ज़ नमाज़ों में कुछ रक्अतों के छूट जाने के बारे में लिखा है। ईद की रक्अतों का फ़र्ज़

सिर्फ़ छः ज़्यादा तक्बीरों का होगा यानी पहली रक्अत में सुब-हान-कल्लाहुम-म के बाद फ़ातिहा से पहले तीन तक्बीर रफ़ायदैन के साथ और दूसरी रक्अत में सूरः पढ़ने के बाद और रुकूअ करने से पहले तीन तक्बीरें रफ़ायदैन के साथ और ज़्यादा अदा करनी होंगी।

सुतरे के मसाइल

अगर खुली जगह नमाज़ पढ़ी जाए, तो अपने सामने फुट भर ऊंची कोई चीज़ या पत्थर रख लिया जाए या सज्दे की जगह के सामने लाठी या छड़ी क़िब्ला रुख़ लम्बी गाड़ दी जाए।

अगर जमाअत के साथ नमाज़ हो तो सुतरा सिर्फ़ इमाम के आगे होना काफ़ी है। सुतरे की जगह छोड़कर नमाज़ के आगे से गुज़ारा जा सकता है। मस्जिद में एक सफ़ का फ़ासला छोड़कर नमाज़ी के आगे से गुज़र जायज़ है।

वित्र की नमाज़ जमाअत के साथ

इमाम तीन रक्अतों में क़िरात ऊंची आवाज़ से पढ़ेगा और हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः या आयतें मिलाएगा, फिर तीसरी रक्अत में सूरः या आयतें पढ़ चुकने के बाद तक्बीरे तह्रीमा पढ़ चुने के बाद तक्बीरे तह्रीमा की तरह तक्बीर कहकर इमाम और मुक़्तदी दोनों कानों तक हाथ उठाएंगे, फिर हाथ बांधकर इमाम और

मुक़्तदी दोनों दुआ-ए-क़ुनूत धीरे से पढ़ेंगे, फिर रुकूअ में जाएंगे, इसके बाद नमाज़ पूरी कर लेंगे।

जुमा की नमाज़

1. जुमा के दिन ज़ुहर के चार फ़र्ज़ पढ़ने के बजाए दो फ़र्ज़ जमाअत से पढ़े जाते हैं, और उनके पढ़ने का तरीक़ा वही है जो फ़ज्र के दो फ़र्ज़ पढ़ने का है।

2. दो फ़र्ज़ अदा करने से पहले अरबी में ख़ुत्बा पढ़ना मस्नून है। ख़ुत्बे के दो हिस्से होते हैं। एक हिस्सा पढ़ चुकने के बाद इमाम थोड़ी देर के लिए बैठ जाता है, फिर उठकर दूसरा हिस्सा पढ़ता है, फिर जमाअत खड़ी हो जाती है।

3. ज़ुहर की नमाज़ में चार फ़र्ज़ों के बाद दो सुन्नतें मुअक्कदा होती हैं और जुमा के दो फ़र्ज़ों के बाद भी दो सुन्नते मुअक्कदा हैं। कुछ के नज़दीक जुमा के फ़र्ज़ों के बाद चार सुन्नते मुअक्कदा हैं। बेहतर यह है कि दो भी पढ़ ली जाएं और चार भी यानी छः सुन्नत।

4. अगर कोई जुमा की नमाज़ में शरीक नहीं हो सका, तो वह ज़ुहर की नमाज़ अदा करेगा यानी जिस तरह दूसरे दिनों में ज़ुहर की नमाज़ अदा करता है। इस्लामी दुनिया में बहुत से ख़ुत्बे राइज हैं, हम यहां सिर्फ़ एक ख़ुत्बा नक़ल करते हैं।

जुमा का पहला ख़ुत्बा

अलहम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़िफ़रुहू व नुअमिनु बिही व न-त-वक्कल अलैहि व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरुरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति आमालिना व मंय्यह्दिहिल्लाहु व ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिलहु फ़ला हादि-य लहू व नश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व नश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर-स-ल हू बिल हक़्क़ि बशीरंव-व नज़ीरन बैन य-द-यिस्साअति व मंय्युतिअिल्ला-ह रसूलुहू व अर स लहू फ़-क़द र-श द वह-तदा व मंय्यग़्सिहुमा फ़ इन्नहू क़द ग़वा व इन्नहू ला यज़ुरु इल्ला नफ़्सहू व लंय्यज़ुर्रल्ला-ह शैआ इन-न ख़ैरल हदीसि किताबुल्लाहि व ख़ैरल हदि्य हदयु मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व इन-न ख़ैरल उमूरे अवाज़िमुहा व शर्रल उमरि मुह्दसातु हा कुल्लु मुह्द सतिन बिद अतुन व कुल्लु बिदअतिन ज़लालतुवं व कुल्लु ज़लालतिन फ़िन्नारि०

अम्मा बाद फ़अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम क़ालल्लाहु तआला फ़ी किताबि हिल मजीद या ऐयुहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नू दि-य लिस्सलाति मिंय्यौमिल जुमु अति फ़सऔ इला ज़िक्रिल्लाहि व जरुल बैअ ज़ालिकुम ख़ैरुल्लकुम इन कुन्तुम तालमून फ़ इज़ा क़ुज़ियतिस्सलातु फ़न्ताशिरु फ़िल अर्ज़ि वब्तग़ू मिन फ़ज़्लिल्लाहि व ज़्कुरुल्ला-ह कसीरल ल

अल्म-कुम तुफ़्लिहून व इज़ा रऔ तिजारतन औ लह्-व-निन-फ़ज़्ज़ू इलै हा व त-र-कू-क क़ाइमा कुल मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुम मिनल लह्वि व मिनत्तिजारः वल्लाहु ख़ैरुर्राज़िक़ीन स-द-क़ल्लाहुल अलीयुल अज़ीम, व न-फ़-अनी व ईया कुम बिआयातिही व ज़्ज़िक्रिल हकीम इन्नहू तआला जवादुन करीमुम मलिकुन बर्रुन रअफ़ुर्रहीम०

(सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। हम उसकी हम्द करते हैं और उससे मदद तलब करते हैं फिर उससे बख़्शिश चाहते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं। हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं अपने नफ़्सों के शर से और अपने बुरे आमाल से, जिसको अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अल्लाह गुमराह करे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और हम गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। अल्लाह ने उन्हें हक़ देकर भेजा है। वह लोगों को क़ियामत के आने से पहले ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले हैं। जिस आदमी ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की, वह सीधी राह चला, और उसने हिदायत पाई और जिसने इन दोनों की नाफ़रमानी की, वह भटक गया और उसने सिवाए अपने नफ़्स के किसी को नुक़्सान न पहुंचाया और वह ख़ुदा का कुछ न बिगाड़ सकेगा। यक़ीनन बेहतरीन कलाम अल्लाह की किताब है और बेहतरीन हज़रत

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत है। यक़ीनन वे काम अच्छे काम हैं जो अटल हैं और वे काम बुरे हैं जो (अपने आप) गढ़ लिये हैं। हर नई गढ़ी हुई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही दोज़ख़ में ले जाने वाली है।

इन बातों के बताने के बाद, पस मैं पनाह में आना चाहता हूं अपने रब की मर्दूद शैतान से और शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला मेहरबान है। अल्लाह ने अपनी बुज़ुर्ग किताब में फ़रमाया है कि ऐ ईमान वालो ! जब तुम्हें जुमा के दिन नमाज़ के लिए पुकारा जाए, पस तुम अल्लाह के ज़िक्र की ओर दौड़ो और ख़रीदने और बेचने का काम छोड़ दो। यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर यह तुम्हें मालूम हो जाए। पस जब नमाज़ हो जाए तो ज़मीन में ख़ुदा की मेहरबानी की खोज में फैल जाओ और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम फ़लाह पाओ और जब वे तिजारत या किसी खेल-कूद की चीज़ को देखते हैं तो उसकी ओर लपकते हैं और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम !) आपको अकेला छोड़ जाते हैं। इन्हें कह दो जो कुछ अल्लाह के पास है, वह तुम्हारी इस तिजारत और खेल-कूद से बेहतर है और अल्लाह बेहतर रोज़ी देने वाला है सच कहा अल्लाह ने, बहुत ऊंची बुज़ुर्गी वाला है (अल्लाह) अपनी आयतों और हिक्मत भरी नसीहतों के ज़रिए मुझे और आपको नफ़ा पहुंचाए। यक़ीनन वह बहुत बुज़ुर्ग दाता, इज़्ज़तों का

हक़दार, मालिक, भलाई करने वाला मेहरबान और रहम करने वाला है।)

जुमा का सानी (दूसरा) ख़ुत्बा

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिहिल अमीन अम्मा बअदु फ़या मअशरल मुस्लेमीन अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम क़ालल्लाहु तआला फ़ी किताबिहिल करीम इन्नल्लाह-ह व मलाइकतहू युसल्लू-न अलन्नबी या ऐयुहल्लज़ी-न आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिम बिअददि मन सल्ला व साम अल्ला हुम-म सल्लि अला सय्यदेना व मौलाना मुहम्मदिंम बिअदि मन क़-अ-द व क़ाम अल्लाहुम-म सल्लि अला जमीअिल अम्बियाह वल मुर्सलीन व अला साइरिस्सहाबति व त्ताबिईन व अला अिबादिक स्सालिहीन अल्लाहुम-म अय्यिदिल इस्ला-म व ल मुस्लिमीन अल्लाहुम-मन्सुर मन न-स-र दी-न मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वज-अलना मिन्हुम वख़्ज़ुल मन ख़-ज़-ल दी-न मुहम्मदिन सल्ललाहु अलैहि व सल्लम व ला तजअलना मिनहुम अल्लाहुम-म अरिनल हक़-क़ हक़्क़ंव-व वर्ज़ुक़्ना इजतनाबहू व अरिनल बाति-ल बातिलंव-वर्ज़ुक्ना इज्तिनाबहू अल्लाहुम-म सब्बितना अलल इस्लामि अल्लाहुम-म नव्विर क़ुलू बना बिनूरिल ईमानि अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिल

मुअमिनी-न वल मुअमिनाति ल-अह्या-अ मिनहु मुल अम्वाति इबादल्लाहि रहिम कुमु ल्लाह इन्नल्लाह था मुरु बिल अद्लि वल एहसानि व ईताइ ज़िल क़ुर्बा व यन्हा अनिल फ़ह्शाई वल मुन्करि वल बग़िय यअिज़ुकुम लअल्लकुम तज़क्करुन उज़्कुरुल्ला-ह यज़्कुर्कुम वद अूहू यस्तजिब लकुम व ल-ज़्रि क़ुल्लाह तआला आला व औला व अज़्ज़ु व अजल्लु व अक्बर०

(सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम दुनियाओं का रब है और दरूद व सलाम उसके रसूल अमीन पर। अम्मा बाद, ऐ मुसलमानों के गिरोह! मैं पनाह चाहता हूं अल्लाह की शैतान मर्दूद से और शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो मेहरबान और रहम करने वाला है। अल्लाह अपनी इज़्ज़त वाली किताब में फ़रमाता है कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते रहमत नाज़िल करते हैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, इसलिए तुम भी उसको ऐ ईमान वालो! दरूद व सलाम भेजो। ऐ हमारे अल्लाह! रहमत फ़रमा हमारे सरदार और आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, जितनी बार आपने नमाज़ पढ़ी और रोज़े रखे। ऐ अल्लाह! रहमत फ़रमा हमारे सरदार और आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, जितनी बार आप अपनी ज़िंदगी में बैठे और खड़े हुए। ऐ अल्लाह! रहमत फ़रमा, तमाम नबियों और रसूलों पर और तमाम सहाबा किराम और ताबईन पर और अपने ताबईन पर और अपने तमाम नेक बन्दों पर। ऐ अल्लाह! इस्लाम

और मुसलमानों की मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! तू उस आदमी की मदद फ़रमा जो मुहम्मद सल्ल० के दीन की मदद करे और हमें ऐसे लोगों में से बना। ऐ अल्लाह! तू उस आदमी को ज़लील व रुसवा कर जो मुहम्मद सल्ल० के दीन को ज़लील व रुसवा करने की कोशिश करे और हमें ऐसे लोगों में से न बना। ऐ अल्लाह! हमें इस्लाम पर जमाए रख। ऐ अल्लाह! हमारे दिल ईमान के नूर से जगमगा दे। ऐ अल्लाह! तमाम मोमिन मर्दों और तमाम मोमिन औरतों को माफ़ फ़रमा दे, चाहे वे ज़िंदा हों या फ़ौत पा चुके हों। ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम पर ख़ुदा की रहमत हो। बेशक अल्लाह तुम्हें इंसाफ़ और एहसान का हुक्म देता है और तुम्हें अपने क़रीबी रिश्तेदारों की मदद का हुक्म देता है और वह तुम्हें बेहयाई और बुराई के कामों से और बग़ावत से रोकता है और इस बात की तुम्हें नसीहत फ़रमाता है, शायद कि तुम नसीहत क़ुबूल कर लो। तुम अल्लाह को याद करो, वह तुम्हें याद करेगा। उसे ही पुकारो, वह तुम्हारी मदद को पहुंचेगा और अल्लाह की याद बहुत ऊंचा और बड़ा काम है।

दोनों ईदों की नमाज़

1. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई शरीअत में सिर्फ़ दो ईदें हैं—एक ईदुल फ़ित्र और दूसरी ईदुल अज़्हा।

2. ईद की नमाज़ का वक़्त ईद के दिन नेज़े के बराबर सूरज के निकलने के बाद से लेकर सूरज ढलने से पहले तक है।

3. यह नमाज़ भी जेहरी होती है यानी इसमें क़िरात इमाम ऊंची आवाज़ से करता है।

4. यह नमाज़ दो रक्अत होती है। फ़र्क़ यह है कि इसमें छः तक्बीरें ज़्यादा होती हैं। तीन पहली रक्अत में और तीन दूसरी रक्अत में, वह इस तरह कि इमाम 'सुब हा-न-कल्लाहुम-म से लेकर 'व ला इला-ह ग़ैरुक तक पढ़ चुकने के बाद तीन बार अल्लाहु अक्बर कहकर हाथ कानों तक उठाता रहेगा और फिर खुला छोड़ देता रहेगा, यानी बांधेगा नहीं। फिर तीसरी ज़्यादा तक्बीर के बाद हाथ बांधकर क़िरात शुरू करेगा, फिर दूसरी रक्अत में क़िरात ख़त्म करने के बाद पहले तीन ज़्यादा तक्बीरें कहेगा, फिर चौथी तक्बीर कहकर रुकूअ को जाएगा। मुक़्तदी तक्बीर कहते वक़्त हाथ उठाने और छोड़ने में इमाम की पैरवी करेंगे।

5. ईदुल फ़ित्र के मौक़े पर कुछ न कुछ खाकर ईदगाह को जाना चाहिए और ईदुल अज़्हा के मौक़े पर वापस

आकर खाना बेहतर है। मुस्तहब यह है कि सबसे पहला खाना अपनी क़ुर्बानी के गोश्त से खाए।

6. इस नमाज़ के लिए न अज़ान होती है और न इक़ामत होती है।

7. अगर ईद की नमाज़ शुरू है और ख़तरा है कि अगर वुज़ू करूंगा तो इतने में नमाज़ ख़त्म हो जाएगी, तो पानी होने के बावजूद भी तयम्मुम करके जमाअत से मिल सकता है।

8. जिस तरह ईद की नमाज़ पढ़ना वाजिब है, उसी तरह नमाज़ के अदा हो जाने के बाद ख़ुत्बा सुनना भी वाजिब है।

9. ईदगाह को एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना मस्नून है।

10. ईदुल फ़ित्र के मौक़े पर ईदगाह को जाते हुए और वापस आते हुए धीरे से और ईदुल अज़्हा के मौक़े पर ऊंची आवाज़ ये तक्बीरें आदमी को पढ़नी चाहिएं—

'अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु'

अगर कभी ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो जाए कि ईद के दिन ईद की नमाज़ न पढ़ी जा सके तो ईदुलफ़ित्र में सिर्फ़ दूसरे दिन पढ़ी जाएगी और ईदुल अज़्हा दूसरे दिन और मजबूरी में तीसरे दिन भी पढ़ी जा सकती है।

11. यही तक्बीरें 9 ज़िलहिज्जा की फ़ज्र की नमाज़ से लेकर 13 ज़िलहिज्जा की अस्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़

(जमाअत के साथ) के बाद कहना मुक़ीम पर वाजिब है। ये पांच दिन 'अय्यामे तश्रीक़' कहलाते हैं।

ईदुल फ़ित्र का पहला ख़ुत्बा

वैसे तो कई ख़ुत्बे राइज हैं, यहां सिर्फ़ एक ख़ुत्बा नक़ल करने को काफ़ी समझा गया है। ख़ुत्बे के शुरू में तीन तक्बीरें पढ़ी जाएं और बीच में भी अलग-अलग जगहों पर पढ़ी जाएं, कुल नौ बार पढ़नी चाहिए।

'अल-हम्दु लिल्लाहिल जलीलिल अक्बर अल्लज़ी ला राइद-द लिमा क़द-द-र व ला दाफ़ि-अ लिमा अरा-द मिन नफ़अिन अव ज़रर रिन ख़ालिक़ुल जिन्नि वल ब-शर मुह्यिल अर-ज़ बिवाबिलिल मत्रि व राफ़िअिस्समाह बिग़ैरि अ-म-दिंय-युन्ज़र व मुज़य्यिनुहा बिकवा किबिंय यह्तदी बिहा मनिस्तबसर अल-ग़ालिबु अला मा ब-त-न व ज़-ह-र अल-मुनज़्ज़हु मिन इदराकिन्नवाज़िर व त-ख़य्यालातिल फ़िक्र नह्हमुदुहू फ़िल असाइलि वल बक्रि हम्दन अदफ़अु बिहिस्सू-अ वज़-ज-रर व नुअमिनु बिद्दारीन व बिकुतुबिही व रुसुलिह व बिल क़-द-रिही नशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व ला ज़िद-द लहू व ला मल-जअ मिन दूनिही व ला अनफ़र अ-ह-दुन फ़रदुन स-म-दु लै-स लहू साहिब तुवं-व ला व-ल-दुहू बल तआला फ़-क़-दर

एअलमू अन-न यौ-म-कुम हाज़ा यौमुन अज़ीम व ईदुम-मुबारकुन करीम, यौमल ईदि व यौमल वईद ईदुल

लिल अबरारि वईदुल लिल फ़ुज्जारि लैसल ईदुल लिमन शरि-ब व अ-क-ल इन्नमल ईदुल लिमन ता-ब व ला यऊदु लैसल ईदु लिमर-राकिबल मताया इन्नमल ईदु लिमन त-र-कल ख़ताया०

वाल मू अन-न यौ-मकुम हाज़ा यौमुन अज़ीमुम मुअक़्कर व ईदुल करीमुम मुअक़्कर अज-ज़लल्लाहु फ़ीहिल अज-र लिस्साइ मी-न व अक्सरु० फ़ह्मदू रब्बकुम अलस्तिकमालि सौमिकुम व काब्बिरुहू कमा अ-म-रहु व अन्फ़िक़ू मिन ख़ालिसिल आमालि व तय्यिबिल कस्बिल हलालि फ़ल्लाहु फ़ीहि अमरल फ़ित-र-त अनजमीअिल अयालि वल अत्फ़ालि वल बालिग़ी-न वल इरक़ाइ वल इनासि वज़्ज़ुकूर कुल्लु वाहिदिम मिनल अदलि साअुल लिसाइन्नबीयि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व हु-व ख़म्सुन अरतालिन व सुलुसु रतलिन मिन ग़ालिबिन मा यक्तालू-न फ़िल ब-लदि व योद्ख़्ख़र इक़्तिदाअल लि सय्यिदिल बशर व इख़राजुहा क़ब-ल सलातिल ईद व अतहर व मल्लम युख़रिज़ुहा फ़ी बक़ीयति हाज़ल यौमि व ला तुअख़्ख़र, तक़रीबन इला रब्बिकुम व तम्हीसल लिज़ुनूबिकुम फ़इन्नल्ला-ह ज़ाकिरुल लिमन ज़-क-रहू व शरिरुल मिलन शकर० व अनिन्नबीयि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन्नहू क़ा-ल लम यज़ल सौमुकुम बैनस्सामाइ वल अरज़ि इला अन-न अहदुकुम युअद्दी ज़का-त सौमिही कमा जा-अ फ़िल ख़बर व क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मन सा-म रमज़ान वत्त ब-अ-हू बिस्सित्ततिन मिन

शव्वालिन फ़-क-अन्नमा सा मद-दह-र कुल्लहू अल्लाहुम मग़्फ़िर लना मा त-क़ुद्द-म मिन ज़म्बिना व मा त-अख़्ख़र बिरहमति-क या अर-हमर-राहिमीन० वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम फ़इज़ा बरिक़ल ब-सरु व ख़-स-फ़ल क़मरु व जुमिअश शम्सु वल क़-मर यक़ूलुल इंसानु यौमइज़िन ऐनल मफ़र० अन्नहू तआला जवादुन करीमुम मलिकुन बर्रुर रऊफ़ुररहीम०

(सारी हम्द व सना ख़ुदा के लिए है जो बुज़ुर्ग और सबसे बड़ा है। उसकी तक़्दीर को कोई फेरने वाला नहीं, जिसको वह नफ़ा या नुक़्सान देने का इरादा करे, उसे कोई टाल नहीं सकता। जिन्नों और इंसानों का पैदा करने वाला है, ज़िंदा करने वाला है ज़मीन को बारिश के साथ और बुलन्द करने वाला है आसमानों के बग़ैर स्तूनों के जो नजर आ सकें और सजाने वाला उसे सितारों से, उनसे वह रास्ता पा सकता है जो उन्हें देखें, वह सब पोशीदा और जाहिर पर ग़ालिब है, पाक है वह इससे कि उसे आंखें देख सकें और ज़ेहन में कोई उसका ख़्याल आ सके। हम उसकी हम्द करते हैं सुबह और शाम, ऐसी हम्द जिससे मुसीबत और दुख दूर होता है। हम दोनों जहानों पर ईमान रखते हैं और उसकी किताबों, रसूलों और तक़्दीर पर ईमान रखते हैं। हम गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वही अकेला माबूद है, उसका कोई शरीक नहीं, उसका कोई मुक़ाबले का नहीं। उसके सिवा पनाह की कोई जगह

नहीं। उससे कोई आदमी भाग नहीं सकता, वह एक है, तनहा है, बेनियाज़ है, न उसकी कोई बीवी है, न बच्चा, बल्कि वह इस (ऐब) से बहुत बुलन्द और क़ुदरत वाला है।

जान लो तुम्हारा यह दिन बहुत बड़ा दिन है, ईद का दिन है, बरकत वाला और इज़्ज़त वाला है। यह दिन ख़ुशी का दिन भी है और डरने का भी। ख़ुशी का दिन नेक लोगों के लिए और डरने का दिन बुरे लोगों के लिए। उसकी कोई ईद नहीं, जिसने सिर्फ़ खाया-पिया, बल्कि उसकी ईद है जो अज़ाब के दिन से डर गया। उसकी कोई ईद नहीं जिसने सिर्फ़ उससे ख़ुशबू हासिल की है, ईद तो उसकी है जिसने गुनाहों से तौबा की, ऐसी तौबा कि फिर वह ग़लत काम न किया, उसकी ईद नहीं जो सिर्फ़ सवारियों पर सवार हुआ। ईद तो उसकी है, जिसने गुनाह करने छोड़ दिए।

जान लो यह तुम्हारा दिन बड़ी इज़्ज़त वाला दिन है। यह ईद का दिन है, इज़्ज़त और मर्तबे वाला दिन है। उस दिन अल्लाह रोज़ेदारों को बहुत ज़्यादा इनायत फ़रमाता है। अल्लाह का शुक्र करो, रोज़े पूरे करने पर और उसकी बुज़ुर्गी बयान करो जिस तरह कि उसने हुक्म दिया। ख़र्च करो अपने बेहतरीन अमल से पाकीज़ा और हलाल कमाई से। अल्लाह उस दिन में तुम्हें अपने बाल-बच्चों, नाबालिग़ बच्चों, बालिगों और ग़ुलामों औरतों की ओर से फ़ितराना अदा करने का हुक्म देता है, सब उसमें बराबर हैं। यह (फ़ितराना) एक साअ है, साअ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम वाला जो पांच रतल और तिहाई रतल के बराबर है, जिससे आम तौर पर हमारे शहरों में नापा और जमा किया जाता है। यह सैयदुल बशर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी है) इसका फ़ितराना ईद की नमाज़ से पहले अदा करना अफ़ज़ल और बेहतर है। जो आदमी ऐसा न कर सके वह उस ही दिन अदा करने की कोशिश करे, देर न करे। यह तुम्हारे लिए अल्लाह के क़ुर्ब का ज़रिया है और इन गुनाहों के को मिटाने का सबब है। यक़ीनन अल्लाह उसे याद करता है जो उसे याद करे। अल्लाह उसकी क़द्र करता है जो उसका शुक्र अदा करे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत है कि तुम्हारे रोज़े ज़मीन और आसमान के बीच लटकते रहते हैं, जब तुम उसकी ज़कात (फ़ितराना) अदा न करो, जैसे कि हदीस में आया है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो आदमी रमज़ान के रोज़े रखे, फिर उनके बाद शव्वाल के छः रोज़े भी रख ले, तो गोया उसने साल भर रोज़े रखे। अल्लाह अपनी ख़ास रहमत से हमारे गुनाह माफ़ कर दे। हमारे तमाम वे गुनाह जो हमसे हो चुके हैं और आगे होने वाले हैं। ऐ रहम करने वालों के रहम करने वाले और सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। मैं पनाह में आना चाहता हूं अल्लाह की शैतान मर्दूद से और शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो मेहरबान रहम करने वाला है, जब चुंधिया जाएंगी आंखें और चांद को गरहन लग जाएगा, जब सूरज और चांद एक हो जाएंगे, उस वक़्त

इंसान कहेगा, अब कहां है भागने की जगह, बेशक अल्लाह बड़ा दाता है, बख़्शिश करने वाला है, बादशाह है, बुज़ुर्ग और अच्छाई करने वाला मेहरबान है।

ईदुलफ़ित्र का दूसरा ख़ुत्बा

जो जुमा के लिए दूसरा ख़ुत्बा लिख गया है, उसे ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा के दूसरे ख़ुत्बे के तौर पर पढ़ा जाए और अलग-अलग जगहों पर तक्बीरें बढ़ा दी जाएं।

सुबहानल्लाहिल जलीलिल अक्बर अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु कुल्लमा ज़ुम्मत रकाबुल हजीजि इलल बैतिल हरामि वर-रुक्नि वल हज्रि अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु अ-द-द मन व-क़-द-फ़ बि अ-र-फ़ाति न व रम्यल हजराति व ज़ह्हा व न-हर अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु अक्बर वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु अ-द-द मन ता-फ़ बिल काबति वर-रुक्नि वल-ह-जर० अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु मा-ख़ा-ब अब्दुन इस्तिग़ा-स बिरब्बिही वस्तन्सर०

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अ-आ-द अलैना अ-वाइ-द फ़ज़्लिही अल्लती तऊदु फ़ी कुल्लि आमिंव-व तज़्हर व मद-द अलैना अवाइ-द क-र मिही ईदुंव-यऊदु अलैना फ़ी

कुल्लि आमिंव-व यकर्रर॰ व ज़क्का अब्दा-न ना मिन दरनिस्ससय्यिआति व तह-ह रिही फ़-रहिमल्लाहु मन अज-ज़-मल्लाहु व कब्बर॰ अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहुअल्लज़ी ज-अ-ल लिकुल्लि शैइन वक़्तन व अ-जलम-मुक़द्दर॰ व अश्हदु अन-न सय्यिदना व नबीय ना व मौलाना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अफ़-ज़-ल मन शद्दि-दल अर का-नल बैतल हरा-म बिल हज्जि व अम्मर॰ व अज्जल मन अब्ब द व नह-ह-र व कब्बर॰ वअलमू अन-न यौम कुम हाज़ा यौमुन शरीफ़ुन व इदुम-मुबारकुन हनीफ़ुन शर-र-फ़हूल्लाहु व अज़्ज़-म-हू व फ़ज़्ज़-लहू वह-तर-महू फ़सुब-हा-न मन औ-ज़-ह लनस्सबी-ल व ख़स-स उम्मतु मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिल ग़ुर्रति वत्तजम्मुलि वम-त-ह-न नबी-यहू इब्र-राही-म ल ख़ली-ल बिज़ब्हि व-ल-दिही इस्मा ओ-ल अ-म-रहू बिज़ालि-क फ़िल मनामि रोया हक़्क़िन ला अज़-ग़ास अह्लामिन फ़-क़ा-ल मुसर्रिहन व मुख़्बिरन या इस्माईलु इन्नी अरा फ़िलमनामि अन्नी अज़्ज़ बहु-क फ़न्ज़ुर मा जा तरा क़ा-ल या अ-बतिफ़ अल मा तुअ मुरु स-त जिदुनी इनशाअल्लाहु फ़न्ज़ुर मिनस्साबिरीन॰ फ़ लम्मा अस्लमा व तल्लहू लिल जबीन॰ व ना दैनाहु अंय्या इब्राहीम॰ क़द सदद्क़-तर-रोया इन्ना कज़ालि-क नज़्ज़िल मुह्सिनीन इन-न हाज़ा लहुवल बलाउल मुबीन व फ़दैनाहु बिज़ब्हिन अज़ीम व तर-रक्ना अलैहि फ़िल आख़िरीन व सलामुन अला इब्राहीम व ज-अ-ल ज़ालि-क फ़ज़ील तल

लि इब्राहीम व तशरीफ़ल लि इस्माई-ल अलैहिमस्सलामु व ज-अ-ल सुन्न-त मिम बादिही इला यौमिल मह्शर०

अनिल ह-सनि ब्नि अलीयिन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा अन्नहू क़ा-ल मंव्व-ज-द स-अ-त फ़लम युज़ह्हि फ़ला यक़्रुबन-न मुसल्लाना फ़-त-क़र्रबू अिबादल्लाहि फ़ी हाज़ल यौमि बिज़ायाकुम वज-अलू मिन अत यबि ज़ख़ाइरिकुम अिन्दल्लाहि फ़इन्नाहा बियौमिल क़ियामति मतायाकुम वज्तनिबुल औरा-अ वल-अरज़ा-अ वल-मरी-ज़-त वल जरबा-अ व मक़्तूअतुल उज़ुनि व मह्दमतुल अस्नानि व कुल-ल ज़ा-त ऐबिन यन्क़सुमिन लह्मिहा वख़्तारुहा लिसमनिहा फ़श्शतुस्सीनतु अफ़ज़लु मिन शाती-न हज़ल तीन फ़ल-बदनतु अनू सब अिंव-वल ब-क़-रतु अन सबअिन वश्शतु अंव्वाहिद व क़ालल्लाहु तआला लंय्यनालल्लाहु लहूमहा व ला दिमाउहा व लौकय्य नालु हुत्तक्वा मिनकुम कज़ालिका सख़्ख़र हा लकुम लितो कब्बिरुल्लाह अला मा हदाकुम व बश्शिरिल मुहसिनीन० इन्नहू तआलाज० वादुन करीमुममलिकुन बर्रुन रऊफ़ुरहीम०

(पाक है अल्लाह जो बुज़ुर्ग और सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है और सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। (यह ख़ुदा की तारीफ़) इतनी बार जितनी अरफ़ात में लोगों ने वकूफ़ किया, और कंकड़ियां फेंकी और क़ुरबानियां कीं। अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है और सब

तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। वह कभी नामुराद न हुआ, जिसने अपने रब से फ़रियाद की और मदद मांगी। सब तारीफ़ें, अल्लाह के लिए हैं जो फेर लाया है इन पर अपने फ़ज़्ल के घेरे, जो हर ईद के मौक़े पर आते हैं और ज़ाहिर होते हैं और बिछाए हमारे लिए दस्तरख़्वान अपने करम के। यह ईद है जो कि पलट आती है हम पर और हर साल बार-बार पलंट आती है और साफ़ किया हमारे ज़िस्मों को गुनाहों की मैल से और पाक किया, सो रहम करे अल्लाह उसपर जिसने अल्लाह की ताज़ीम की और बड़ाई बयान की। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। जिसने हर चीज़ के लिए एक वक़्त और मुद्दत मुक़र्रर फ़रमाई है और मैं गवाही देता हूं कि हमारे सरदार, हमारे नबी, हमारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। वह अफ़ज़ल है उन सबसे जिसने इबादत की क़ुर्बानी की और तक्बीर कही। जान लो कि तुम्हारा दिन इज़्ज़त वाला दिन है, ईद का दिन है, बरकत वाला दिन है, मर्तबे वाला दिन है। अल्लाह ने उसे शरफ़ बख़्श अज़्मत बख़्शी, फ़ज़ीलत दी और मुहतरम बनाया। पाक है वह ज़ात जिसने हिदायत का रास्ता वाज़ेह फ़रमाया और ख़ास कर लिया उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सफ़ेदी और रोशनी से और जिसने अपने नबी इब्राहीम ख़लीलुल्लाह का इम्तिहान लिया अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ज़िब्ह करने में, हुक्म दिया उसे

इस बात का नींद में वह सच्चा ख़्वाब था, परेशान ख़्याली न थी, फिर भी कहा (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) साफ़-साफ़ और ख़बर देने के तौर पर, ऐ इस्माईल! मैंने सपने में देखा है कि मैं तुझे ज़िब्ह कर रहा हूं, फिर बताओ, तुम्हारा क्या ख़्याल है? इस्माईल अलैहिस्सलाम ने कहा, ऐ अब्बा जान! कर गुज़रें जिसका आपको हुक्म दिया गया है, इनशाअल्लाह, आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे, जब दोनों ने ख़ुदा के आगे सर झुका लिया और लिटाया इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस्माईल को मुंह के बल, तो निदा दी हमने ऐ इब्राहीम! तूने अपने सपने को सच्चा कर दिखाया, हम इस तरह एहसान करने वाले को जज़ा देते हैं, बेशक यह बहुत बड़ी आज़माइश थी और हमने बहुत बड़ी कुर बानी बदले में अता की और उसे ज़रूरी कर दिया हमने पिछलों पर और सलामती हो इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और कर दिया अल्लाह ने फ़ज़ीलत की वजह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए और कर दिया उसे सुन्नत (एक बेहतर तरीक़ा) क़ियामत तक आने वालों के लिए।

हज़रत हसन बिन अली रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने ताक़त रखने के बावजूद क़ुरबानी न की, उसे चाहिए कि वह हमारी ईदगाह में न आए। ऐ अल्लाह के बन्दे! उस दिन क़ुर्ब हासिल करो अपने रब का अपनी क़ुर्बानी के ज़रिए और अपने रब के पास उसे पाकीज़ा ज़ख़ीरा बनाओ। ये क़ियामत के दिन तुम्हारी सवारियां होंगी, कानी, लंगड़ी,

बीमार, ख़ारशी, कान कटी और जिनके दांत गिर गए हों और ऐबदार से जिस ऐब के ज़रिए गोश्त घट जाता है, उनकी क़ुर्बानियां करने से बचो, मोटी क़ुर्बानियां चुनो, एक मोटी बकरी की क़ुरबानी दो दुबली बकरियों की क़ुर्बानी से बेहतर है। ऊंट की क़ुर्बानी सात आदमियों के लिए है, गाय की क़ुर्बानी सात आदमियों के लिए और बकरी की क़ुर्बानी एक आदमी के लिए है। अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं पहुंचते अल्लाह को तुम्हारी क़ुरबानियों के गोश्त और ख़ून। बल्कि उसको तो तुम्हारे (दिल का) तक़्वा पहुंचता है। इसी तह उन जानवरों को तुम्हारे लिए सधा दिया है ताकि तुम अल्लाह की बुज़ुर्गी बयान करो, जैसे कि तुम्हें हिदायत की जाए और ख़ुशख़बरी दे दो एहसान करने वालों को, बेशक अल्लाह बुलन्द व बरतर है, दाना है, मालिक है, अच्छाइयों वाला है, मेहरबान और रहम करने वाला है।

दूसरा ख़ुत्बा

जुमा वाला दूसरा ख़ुत्बा पढ़ लेना इस मौक़े पर काफ़ी है, सिर्फ़ तक्बीर को बढ़ा लिया जाए।

जनाज़े की नमाज़

नमाज़ का तरीक़ा

1. मैयत को उत्तर-दक्खिन की दिशा में पश्चिम की ओर रख दिया जाता है, फिर इमाम उस मैयत के सामने क़िबला रुख़ खड़ा हो जाता है और पीछे मुक़्तदी सफ़ बांध कर खड़े हो जाते हैं।

2. फिर नीयत कर ली जाती है कि अल्लाह की हम्द व सना कर रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दरूद का तोहफ़ा भेज रहे हैं और इस मैयत के लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत कर रहे हैं। यह नीयत दिल में कर लेना काफ़ी है।

फिर इमाम अल्लाहु अक्बर कहकर कानों तक हाथ उठाने के बाद हाथ बांध लेगा और मुक़्तदी भी उसी तरह करेंगे, जिसतरह आदमी बाक़ी नमाज़ों में करता है, फिर इमाम और मुक़्तदी सब धीरे-धीरे अपने आप पढ़ेंगे।

'सुब-हा-न-क ल्ला हुम-म व बिहम्दि-क व त-बा-र-कस्मु-क व तआला जद्दु-क व जल्ल सनाउ-क व ला इला-ह ग़ैरुक़०'

(ऐ अल्लाह! तू पाक है और ख़ूबियों वाला है, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी शान बहुत ऊंची है, तेरी ख़ूबियां बहुत बड़ी हैं और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।)

फिर इमाम ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहेगा

और मुक़्तदी धीरे से तक्बीर कहेंगे। हाथ पहले ही की तरह बांधे रखेंगे, फिर पढ़ेंगे—

'अल्लाहु-म सल्लि अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त व सल्लम त व बारक-त व रहिम-त व त-रह-हम-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद०'

(ऐ अल्लाह ! रहमत फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर जैसा कि तूने रहमत फ़रमाई, सलामती दी, बरकत फ़रमाई, रहमत व शफ़क़त फ़रमाई हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और उनकी औलाद पर, यक़ीनन तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बुज़ुर्गी वाला है।)

फिर पहले ही की तरह तक्बीर कही जाए।

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-क रिना व उन्साना अल्लाहुम मन अह्यैतहू मिन्ना फ़ अह्यिही अलल इस्लामि व मन त-वफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़-त-वफ़्फ़हू अलल ईमानि०'

(ऐ हमारे अल्लाह ! बख़्श दे हमारे ज़िंदों को, हमारे मुर्दों को, हमारे हाज़िर और ग़ैर-हाज़िर लोगों, हमारे छोटों और बड़ों को, हमारे मर्दों को और हमारी औरतों को। ऐ हमारे अल्लाह ! हममें से तू जिसको ज़िंदा रखे, इस्लाम पर ज़िंदा रख और जिसको तू मौत दे, उसे ईमान पर मौत दे।)

अगर मैयत नाबालिग़ है तो देखो लड़का है या लड़की है।

अगर लड़का है तो यह दुआ पढ़ी जाए—

'अल्लाहुम-मजअलहु लना फ़रतंव-वज-अलहु लना अज-रवं व ज़ुख़्र-रंव-वज अलहु लना शाफ़िअंव्व मुशफ़्फ़आ०'

(ऐ अल्लाह ! इस (लड़के) को हमारे लिए पेश रौ बना दे और इसे हमारे लिए अज्र की वजह और ज़ख़ीरा बना दे और इसे हमारे लिए सिफ़ारिश करने वाला और सिफ़ारिश क़ुबूल किया हुआ बना दे।)

अगर लड़की है तो यह दुआ पढ़ी जाए—

'अल्लाहुम-मज अल हा लना फ़-र-तंव-वज अलहा लना अज रंव-व-ज़ुख़रंव वज अलहा लना शफ़िअतंव-व मुशफ़-फ़ अ:०'

(ऐ अल्लाह ! इस (लड़की) को हमारे लिए पेश रौ बना दे और इसे हमारे लिए अज्र की वजह से ज़ख़ीरा बना दे और इसे हमारे लिए सिफ़ारिश करने वाली और सिफ़ारिश क़ुबूल की हुई बना दे।)

फिर पहले की तरह तक्बीर कहें और दाईं ओर मुंह फेरकर 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि' कहें और बाईं ओर मुंह फेरकर 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि' कहें। (पस नमाज़ पूरी हो गई)

अगर जनाज़े की नमाज़ शुरू हो गई और किसी को कभी वुज़ू करना है और वह महसूस करता है कि मैं अगर वुज़ू में लगता हूं तो नमाज़ ख़त्म हो जाएगी, तो उसे चाहिए कि वह तयम्मुम करके शरीक हो जाए, बशर्ते कि यह

आदमी मैयत का वली न हो। क्योंकि वली दोबारा जनाज़े की नमाज़ पढ़ सकता है।

जनाज़े की नमाज़ की तक्बीरें बाक़ी नमाज़ों की रक्अत की जगह पर समझी जाती हैं। अगर कोई आदमी नमाज़ के शुरू में शरीक न हो सका, तो वह इमाम के साथ सलाम न फेरे, बल्कि बाक़ी नमाज़ का जो हिस्सा रह गया है, उसे पूरे करे जिस तरह कि दूसरी नमाज़ों की तर्तीब होती है, यहां भी उसी तर्तीब को ध्यान में रखे।

नमाज़े इस्तिस्क़ा बारिश मांगने की दुआ

नमाज़ का तरीक़ा

यह नमाज़ दोपहर से पहले पढ़ी जाती है। यह नमाज़ दो रक्अत और जह्री होती है, जिस तरह कि फ़ज्र के दो फ़र्ज़। अगर पहले दिन बारिश न आए तो दूसरे दिन पढ़ी जाए, इसी तरह तीन दिन तक पढ़ी जाए। नमाज़ अदा कर चुकने के बाद नीचे लिखी दो दुआएं मांगी जाएं, इनके अलावा भी दुआएं मांगी जा सकती हैं। इमाम दुआ मांगे और मुक़्तदी आमीन कहे।

1. अल्लाहुम्मस्क़ि अिबादि-क व बहाइम-क वन-शुर रह-म-त-क वह्यि ब-ल द-कल मय्यिति०

(ऐ अल्लाह! अपने बन्दों और जानवरों को पानी पिला दे, अपनी रहमत को आम कर दे और अपने मुर्दा शहर को ज़िंदा कर दे।)

2. अल्लाहुम-मस्क़िना ग़ैसम मुग़ीसम मरीअम मुरीअन नाफ़िअन ग़ै-रज़ार्रिन आजिलन ग़ै-र आजिलिन०

(ऐ अल्लाह! हम पर वर्षा कर जो बरसने वाला हो, जी भर देने वाला हो, बहार लाने वाला हो, नफ़ा पहुंचाने वाला हो, नुक़्सान देने वाला न हो, जल्द ही आने वाला हो, देर लगाने वाला न हो।)

नमाज़े इस्तिस्क़ा में शामिल होने वाले लोगों को

चाहिए कि लिबास सादा हो, जिससे घमंड ज़ाहिर हो, वह न हो और लोग आपस में ख़ामोश और ख़ुदा से डरे हुए हों, ज़िक्र और इस्तग़फ़ार में लगे हों और नमाज़ के मौक़े पर कोई काफ़िर मौजूद न होना चाहिए।

चांद गरहन और सूरज गरहन की नमाज़

जब चांद या सूरज गहना जाए (बे-नूर हो जाए) तो उस वक़्त दो रक्अत नमाज़ पढ़ी जाती है। यह नमाज़ जितनी लम्बी हो सके, उतना इस नमाज़ को लम्बा करना चाहिए, यहां तक कि उसकी बे-नूरी ख़त्म हो जाए।

नोट—सूरज गरहन की नमाज़ जमाअत के साथ और चांद गरहन की नमाज़ बग़ैर जमाअत के अदा की जाती है।

ख़ौफ़ की नमाज़

जब लोग लड़ाई की हालत में हों और वे सिर्फ़ एक ही इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना चाहते हों, तो उसका तरीक़ा यह है कि—

फ़ौज को दो हिस्सों में बांट दिया जाए। एक हिस्सा मोर्चे पर रहे और एक नमाज़ पढ़े। एक हिस्सा आए और इमाम के पीछे एक रक्अत अदा करे यानी पहले दो सज्दे करने के बाद बग़ैर सलाम फेरे यह हिस्सा फ़ौज में मोर्चे पर चला जाए और फ़ौज का दूसरा हिस्सा आ जाए और इमाम के पीछे दूसरी रक्अत मय अत्तहीयात के पढ़कर बग़ैर सलाम फेरे यह मोर्चे पर चला जाए और फिर पहला हिस्सा आकर अपने आप बे-क़िरात बाक़ी एक रक्अत पूरी करे, फिर यह हिस्सा चला जाए और दूसरा हिस्सा वापस आ जाए और पहली रक्अत जो वह इमाम के पीछे न पढ़ सका था, पूरी करे और अत्तहीयात भी पढ़े। इमाम सिर्फ़ पहले फ़ौज के हिस्से को पहली रक्अत और दूसरे हिस्से को दूसरी रक्अत पढ़ा कर फ़ारिग़ हो जाएगा। अगर तीन रक्अत वाली नमाज़ हो तो पहला हिस्सा पहली दो रक्अत पूरी करके बग़ैर सलाम फेरे मोर्चे पर चला जाए और दूसरा हिस्सा तीसरी रक्अत इमाम के पीछे अदा करे और इमाम के साथ सलाम फेरे बग़ैर मोर्चे पर चला जाए और फिर क़ायदे के मुताबिक़ हर हिस्सा बारी-बारी अपनी नमाज़ पूरी करे।

ख़ौफ़ की नमाज़ का यह तरीक़ा तब है जबकि पूरी फ़ौज एक इमाम के पीछे नमाज़ अदा करने की ख़्वाहिश रखती हो। अगर यह सूरत न हो तो दो गिरोह होकर एक के बाद एक अलग-अलग इमामों के पीछे नमाज़ अदा करें।

तरावीह की नमाज़

यह नमाज़ रमज़ानुल मुबारक की रातों में पढ़ी जाती है। इशा के चार फ़र्ज़ और दो सुन्नतें अदा करने के बाद वित्र और दो नफ़्ल अदा करने से पहले बीस रक्अत दो-दो करके पढ़ी जाती है। अगर चार रक्अतें एक तक्बीरे तह्रीमा से अदा की जाएं, तब भी दुरुस्त है। यह नमाज़ भी जहरी होती है। आम तौर पर हर रमज़ानुल मुबारक की रातों को इन नफ़्लों में तर्तीब के साथ पूरा क़ुरआन सुनाया जता है और यह सुन्नत है।

हर चार रक्अत अदा करने के बाद बैठकर अल्लाह का ज़िक्र नीचे लिखे शब्दों में किया जाता है, फिर और चार रक्अतें पढ़ी जाती हैं। हर चार रक्अत के दर्मियान बैठने की मुद्दत चार रक्अत में जितना वक़्त लाता है, उतना होना चाहिए।

ज़िक्र

'सुब-हा-न ज़िल मुल्कि वल म-लकूति सुब-हा-न ज़िलअिज़्ज़ति वल अज़्मति वल हैबति वल क़ुदरति वल किब्रियाइ व ल ज-ब रुति० सुब-हानल मलिकिल हय्यिल्लज़ी ला यना मुव ला यमूतु सुब्बहूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्रूहि अल्लाहुम-म अजिरना मिनन्नारि या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु०'

(पाक है वह जो मुल्क और रूहों का मालिक है। पाक

है इज़्ज़त वाला और अज़्मत व हैबत वाला, क़ुदरत, बड़ाई और ग़लबे वाला। पाक है मालिक (बादशाह) जो ज़िंदा है जो कभी नहीं सोता और न कभी उस पर मौत आएगी। वह निहायत पाक है, निहायत मुक़द्दस है, जो हमारा रब है, फ़रिश्तों और रूह का रब है। ऐ हमारे अल्लाह! हमें दोज़ख़ से बचा, ऐ बचाने वाले, ऐ बचाने वाले, ऐ बचाने वाले।

वित्र, जमाअत के साथ

अकेले वित्र पढ़ने का तरीक़ा तो हम लिख आए हैं। उनके जमाअत के साथ पढ़ने में बस यह फ़र्क़ है कि इमाम तीनों रक्अतों में क़िरात ऊंची आवाज़ से करेगा, और तीसरी रक्अत में क़िरात के बाद अल्लाहु अक्बर कहकर सब दुआ-ए-क़ुनूत जो हम लिख आए हैं, धीरे से पढ़ेंगे।

कुछ नफ़्ल नमाज़ें

नमाज़े तस्बीह

यह नमाज़ बग़ैर जमाअत के पढ़ी जाती है। इसका कोई वक़्त तै नहीं है सिवाए उन वक़्तों के, जिनमें कोई नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं, जैसे सूरज निकलते वक़्त, सूरज डूबते वक़्त, ठीक दोपहर के वक़्त, और इसी तरह जिन वक़्तों में नफ़्ल नहीं पढ़े जा सकते, जैसे फ़ज्र के बाद सूरज निकलने तक, अस्र की नमाज़ के बाद मग़रिब की नमाज़ तक और मग़रिब की नमाज़ पढ़ने से पहले के अलावा हर वक़्त पढ़ी जा सकती है।

यह चार रक्अत नफ़्ल होती है।

दूसरी चार रक्अत वाली नफ़्ल और इसमें सिर्फ़ यह फ़र्क़ है कि हर रुकूअ करने से पहले पन्द्रह बार हर रुकूअ से उठने से पहले दस बार और हर बार 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह' कहने के बाद दस बार, हर सज्दे में आने से पहले, हर दो सज्दों के दर्मियान बैठने के समय में दस बार, हर अत्तहीयात के बाद दस बार। ये कुल तीन सौ बार बनते हैं, यह तस्बीह पढ़ते हैं—

'सुबहानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि व इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर०'

(अल्लाह पाक है और ये सब तारीफ़ें उसी के लिए हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह सबसे बड़ा है।)

इस्तिख़ारे की नमाज़

यह नमाज़ ख़ुदा से किसी मामले में भलाई का मश्विरा तलब करने के लिए पढ़ी जाती है। यह दो रक्अत वाली नमाज़ होती है और यह नमाज़ अकेले पढ़ी जाती है। अगर एक बार पढ़ने से कुछ मामले में, जिस बारे में पढ़ी जा रही हो, दिली इत्मीनान न हो, तो दूसरी बार पढ़े, इसी तरह सात रातें उसे पढ़ता रहे, इनशाअल्लाह इत्मीनान हो जाएगा।

इसका तरीक़ा यह है कि दो रक्अत नफ़्ल पढ़कर और नीचे की दुआ पढ़कर पाक बिस्तर पर दाएं पहलू पर क़िब्ला रुख़ होकर सो जाए, किसी से बातें न करे—

'अल्लाहुम-म इन्नी अस्तख़ीरु-क बि इल्मि-क वस्तक़्दिरु-क बिक़ुदरति-क व अस अलु-क मिन फ़ज़्लि-क ल अज़ीमि फ़-इन्न-क तक़्दिरु व ला अक़्दिरु व तालमु व ला आलमु व अन-त अल्लामुल ग़ुयूबि अल्लाहुम-म इन कुन-त तालमु अन-न हाज़ल अम-र ख़ैरुल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति अमरी फ़ अक़्दिरहु ली व यस्सिरह ली सुम-म बारिक ली फ़ीहि व इन कुन-त तालमु अन-न हाज़ल अम-शर्रुल ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबाति अमरी फ़-अस्रिफ़हु अन्नी व स्रिफ्नी अन्हु व क़दुर लिल ख़ै-र हैसु का-न सुम-मर-ज़िनी बिही०'

(ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरे इल्म के ज़रिए से बेहतर मश्विरा तलब करता हूं और तेरी क़ुदरत से तौफ़ीक़ तलब करता हूं और तेरे बड़े फ़ज़्ल का सवाली हूं। तू ही क़ुदरत

वाला है, मेरे बस में कुछ भी नहीं। बेशक तू ही जानता है मैं नहीं जानता और तू ही ग़ैब का इल्म रखता है। ऐ अल्लाह! अगर तेरे इल्म में यह काम मेरे दीन, मेरी मआश (रोज़ी) और अंजामे कार से लिहाज़ से भला है, तो इसे मेरे मुक़द्दर में कर दे और इसे मेरे लिए आसान कर दे। उसमें बरकत भी डाल दे और अगर यह काम मेरे दीन में, मेरी मआश (रोज़ी) और मेरे अंजामेकार के लिहाज़ से बुरा है, तो मुझको इससे और इसको मुझसे दूर फ़रमा, मेरे लिए सिर्फ़ वह मुक़द्दर कर जो मेरे लिए अच्छा हो, वह जहां कहीं भी हो, फिर इसमें मुझ पर राजी हो जा।)

मुसाफ़िर की नमाज़

जब आदमी 48 मील के सफ़र पर रवाना हो तो अल्लाह की ओर से नमाज़ों में उसके लिए कमी हो जाती है। सफ़र जिस ज़रिए से भी हो, जब यह मुसाफ़िर शहर की आबादी से बाहर निकल जाए, तो उसी वक़्त से वह मुसाफ़िर होगा, जैसे क़ब्रिस्तान, ईदगाह या महसूल चुंगी से बाहर निकल जाए तो क़स्र नमाज़ पढ़ेगा यानी चार के बजाए दो पढ़ेगा, बाक़ी दो और तीन रक्अत वालों में क़स्र नहीं करेगा।

मुसाफ़िर के लिए सुन्नतें और नफ़्ल न पढ़ना बेहतर है, क्योंकि नमाज़ की क़स्र रिवायत के तौर पर है। अल्लाह की रियायत और इनाम को क़ुबूल करना चाहिए, हां, अगर कुछ दिन के लिए किसी जगह क़ियाम हो तो क़ियाम के ज़माने में सुन्नत पढ़ना अफ़ज़ल है। नफ़्ल की कोई पाबन्दी नहीं, फ़ुर्सत हो तो जितने चाहे पढ़े।

अगर मुसाफ़िर किसी मुक़ीम के पीछे मुक़्तदी की हैसियत से नमाज़ पढ़ रहा है, तो उस पर इमाम की पैरवी ज़रूरी है, इमाम के साथ पूरी नमाज़ अदा करे। अगर बीच में शरीक हुआ है, तब भी जितनी रक्अत इमाम ने अदा की हैं, यह उतनी ही पढ़े।

जैसे ज़ुहर के चार फ़र्ज़ इमाम पढ़ा रहा है और यह मुसाफ़िर तीसरी रक्अत में शामिल हो गया, तो दो तो यह इमाम के साथ अदा करेगा। इमाम के सलाम फेरने के बाद

बाक़ी दो भी उसे पढ़नी होंगी।

अगर मुसाफ़िर है तो चार रक्अतों वाली फ़र्ज़ों में दो पढ़ाएगा, बाक़ी जो मुक़्तदी मुक़ीम होंगे, वे अपनी नमाज़ पूरी कर लेंगे।

अगर सफ़र में किसी जगह पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत कर ली जाए तो पूरी नमाज़ पढ़नी होगी। इससे कम क़ियाम की शक्ल में क़स्र पढ़ी जाए।

अगर पन्द्रह दिन की नीयत की बुनियाद पर पूरी नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी गई हो और दो चार दिन के बाद ही वहां ऐ रवानगी का प्रोग्राम बन जाए, तो कोई हरज नहीं, जो नमाज़ें पढ़ी गईं, वे दुरुस्त हुईं।

अगर पन्द्रह दिन से कम की नीयत की थी, जैसे बारह दिन की। बारह दिन गुज़र जाने के बाद ज़्यादा ठहरने की ज़रूरत पेश आ गई और बारह दिन की और ज़्यादा नीयत कर ली। इस शक्ल में क़स्र नमाज़ ही पढ़ी जाएगी।

इज्तिमाई सफ़र में मुखिया की नीयत पर एतबार किया जाएगा, जैसे बीवी-बच्चे साथ हों तो बच्चों के बाप की नीयत, सिर्फ़ बीवी हो तो ख़ाविन्द की नीयत, फ़ौज हो तो उसके कमांडर की नीयत का एतबार किया जाएगा।

क़ज़ा नमाज़

- जो नमाज़ें क़ज़ा हो गई हैं, उन्हें तुरन्त अदा करना चाहिए।
- क़ज़ा सिर्फ़ फ़र्ज़ों की और वित्र की होती है। सुन्नतों

और नफ़्लों की क़ज़ा वाजिब नहीं है।

- सूरज निकलते वक़्त, सूरज डूबते वक़्त और दोपहर के वक़्त क़ज़ा पढ़ना दुरुस्त नहीं है। बाक़ी हर वक़्त क़ज़ा पढ़ी जा सकती है।
- अगर मुसाफ़िर की कोई नमाज़ सफ़र की हालत में क़ज़ा हो गई तो घर पहुंच कर उसे अदा करना चाहता हो तो वह सफ़र वाली नमाज़ (दो रक्अत) की क़ज़ा करेगा।
- औरत पर हैज़ और नफ़ास के दिनों की छूटी नमाज़ों का क़ज़ा पढ़ना वाजिब नहीं है। ये नमाज़ें औरत पर माफ़ हैं।
- ईद की नमाज़ अगर छूट गई हो, तो उसकी क़ज़ा नहीं है। इसी तरह अगर जनाज़े की नमाज़ छूट जाए तो उसकी क़ज़ा भी वाजिब नहीं है।

ईद या जनाज़े की नमाज़ें शुरू हो चुकी हैं और एक आदमी का वुज़ू नहीं है। अगर वह वुज़ू करता है, तो नमाज़ जाती रहेगी, तो ऐसी शक्ल में फ़ौरन तयम्मुम करके नमाज़ में शामिल हो जाना चाहिए।

इसी तरह अगर मुक़ीम की कोई नमाज़ इक़ामत की हालत में क़ज़ा हो गई और वह सफ़र के दौरान उसे अदा करना चाहता है, तो वह पूरी नमाज़ अदा करेग, यानी चार रक्अत उसे अदा करनी होंगी।

सज्दा तिलावत और सज्दा सहव

सज्दा तिलावत

कुरआन मजीद में चौदह सज्दे हैं और कुरआन मजीद में वहां हाशिए पर सज्दा लिखा हुआ होता है।

जब आदमी सज्दा की आयत पढ़े या सुने, उस पर सज्दा वाजिब है।

यह सज्दा नमाज़ के सज्दे की तरह करना चाहिए।

अगर एक ही सज्दा की अरयात कई बार एक ही जगह पर सुनी या पढ़ी जाए तो एक ही सज्दा वाजिब है।

अगर एक ही सज्दा की आयत कई बार अलग-अलग जगहों पर पढ़ी या सुनी है तो जितनी जगहें बदलेंगी, उतने सज्दे वाज़िब होंगे।

अगर नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़ी जाए तो सज्दा की आयत ख़त्म करते ही तुरन्त सज्दा किया जाए, फिर बाक़ी सूरः पढ़ी जाए।

वुज़ू करके, क़िब्ला रू होकर अल्लाहु अक्बर कहकर एक सज्दा करना चाहिए।

अगर सज्दे वाली सूरः पर आयत ख़त्म हो, तो रुकूअ में सज्दा की नीयत कर लेने से सज्दा अदा हो जाता है। बेहतर यह है कि सज्दा तिलावत करके आगे की सूरः मिलाए।

अगर किसी आदमी ने नमाज़ की हालत में सज्दे वाली

आयत सुनी तो नमाज़ में सज्दा न करे, बल्कि नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सज्दा करे।

सज्दा सहव का बयान

नमाज़ में वाजिब के भूल कर छूट जाने से सज्दा सह्व वाजिब होता है। अगर सज्दा न किया जाए तो नमाज़ नहीं होती।

सज्दा सह्व करने का तरीक़ा यह है कि आख़िर में सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़कर सिर्फ़ दाएं तरफ़ सलाम फेर लिया जाए, फिर मामूल के मुताबिक़ दो सज्दे करके अत्तहीयात, दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर सलाम फेर लिया जाए। अगर सज्दों के बाद कुछ न पढ़े तो भी अदा हो जाते हैं।

नमाज़ के फ़र्ज़ों को छोड़ देने से नमाज़ नहीं होती। सज्दा सह्व करने से भी जायज़ नहीं होती, ज़रूरी है कि नमाज़ दोहराई जाए।

नमाज़ के फ़र्ज़

नमाज़ के फ़र्ज़ छः हैं—

1. तक्बीरे तह्रीमा,
2. कियाम (खड़ा होकर नमाज़ पढ़ना)
3. क़ुरआन पढ़ना,
4. रुकूअ करना,
5. दोनों सज्दे करना,
6. आख़िर में अत्तहीयात पढ़ने की मिक़्दार में बैठना,

नमाज़ के वाजिब

नमाज़ में वाजिब चौदह हैं—

1. फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रक्अतों को क़िरात से पढ़ना,

2. फ़र्ज़ नमाज़ों की तीसरी और चौथी रक्अत के अलावा तमाम नमाज़ों की हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा पढ़ना,

3. फ़र्ज़ नमाज़ की पहली दो रक्अतों और वाजिब, सुन्नत नफ़्ल नमाज़ों की तमाम रक्अतों में सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः या एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें पढ़ना,

4. अलहम्दु को सूरः से पहले पढ़ना,

5. क़िरात, रुकूअ और सज्दों को तर्तीबवार अदा करना,

6. रुकूअ के बाद क़ौमा करना (यानी सीधा खड़ा होना)

7. दोनों सज्दों के दर्मियान सीधा बैठ जाना,

8. रुकूअ, सज्दे वग़ैरह इत्मीनान से करना,

9. पहले क़ादे में अत्तहीयात के बराबर बैठना,

10. दोनों क़ादों में अत्तहीयात पढ़ना,

11. जह्री नमाज़ों को जह्री और सिर्री नमाज़ों को सिर्री पढ़ना। (जह्री नमाज़ में अगर सूरः फ़ातिहा अर्रहमानिर्रहीम तक या इससे ज़्यादा धीरे से पढ़ा या सिर्री में ऊंची आवाज़ से पढ़ा) तो सज्दा सह्व वाजिब है।

12. अस्सलामु अलैकुम कहकर नमाज़ से फ़ारिग़ होना,

13. वित्र की नमाज़ में हाथ उठा कर तक्बीर कहना और दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ना,

14. दोनों ईदों की नमाज़ों में छः-छः तक्बीरें ज़्यादा कहना।

इनके अलावा दो बार रुकूअ करने, तीन बार सज्दा करने, फ़र्ज़, वाजिब और सुन्नत नमाज़ों में पहले क़ादा में अत्तहीयात के बाद 'अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मद' तक या ज़्यादा पढ़ने या इतनी देर ख़ामोश बैठे रहने से भी सज्दा वाजिब है। अगर मुक़्तदी को इमाम के पीछे कोई सह्व हो जाए, तो उस पर सज्दा सह्व वाजिब नहीं है।

रोज़ा

रोज़े का वक़्त सुबह सादिक़ (पौ फटने) से शुरू होता है और सूरज डूबने तक रहता है।

खाने-पीने और जिमाअ (सम्भोग) से परहेज़ करने का नाम रोज़ा है।

रमज़ान के महीने में सिवाए रमज़ान के रोज़ों के और कोई रोज़ा रखना जायज़ नहीं।

जैसे रमज़ान के महीने में एक आदमी का मन्नत का रोज़ा रखे या क़ज़ा का रोज़ा रखे वग़ैरह, तो अदा न होगा, बल्कि अपने आप रमज़ान का रोज़ा हो जाएगा। मन्नत और क़ज़ा का रोज़ा उसे फिर रखना होगा।

क़ज़ा रोज़े की नीयत रात को करना ज़रूरी है। सुबह होने के बाद नीयत करना काफ़ी नहीं, वह क़ज़ा अदा न होगी, बल्कि नफ़्ल बन जाएगा।

रमज़ान के रोज़े की नीयत रात को सोते वक़्त भी कर सकता है कि सुबह रोज़ा रखूंगा, सेहरी खाते वक़्तभी कर सकता है।

अगर किसी ने दोपहर से पहले नीयत कर ली, तब भी यह रोज़ा हो गया। दोपहर के बाद नीयत करने से रोज़ा न होगा।

इसी तरह नफ़्ल रोज़े की नीयत भी दोपहर से पहले तक की जा सकती है। शर्त यही है कि इससे पहले खाया-पिया कुछ न गया हो।

नीयत के लिए शब्दों का कहना ज़रूरी नहीं, सिर्फ़ दिल में ख़्याल कर लेना काफ़ी है।

29 शाबान की शाम को अगर बादल वग़ैरह की वजह से चांद दिखाई नहीं दिया, तो दूसरे दिन दोपहर तक कुछ न खाओ-पियो। मुम्किन है दोपहर तक कहीं से चांद देखने की ख़बर आ जाए। अगर देखने की ख़बर न आए, तो रोज़े की नीयत कर ली जाए, ईद के दिन किसी रोज़े की नीयत न की जाए।

रोज़े चांद देखकर शुरू किए जाएं और चांद देखकर ख़त्म किए जाएं अलावा इसके कि बादल छाए हुए हों। अगर आसमान पर बादल छाए हैं, तो रमज़ान के रोज़े शुरू करने के लिए एक मशहूर दीनदार और सच्चे आदमी की गवाही काफ़ी है और ईद के चांद के लिए दो दीनदार सच्चे आदमियों की गवाही काफ़ी है। अगर आसमान पर बादल न छाए हों, तो बहुत से लोगों को देखना ज़रूरी है। एक दो आदमी की गवाही पर एतबार न किया जाएगा।

दोनों ईदों के दिन (ईदुल फ़ित्र और ईदे क़ुर्बां) और ज़िलहिज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं तारीख़ को रोज़ा रखना हराम है। इनके अलावा हर तारीख़ को रोज़ा रखा जा सकता है।

अगर किसी औरत को रमज़ान के दिनों में हैज़ या नफ़ाए आ जाए, तो वह उन दिनों में रोज़ा न रखे, बाद में क़ज़ा करे।

भूले से कुछ खा-पी लेने से रोज़ा नहीं टूटता, चाहे

कितना ही खा-पी लिया जाए।

रोज़े में सुर्मा लगाना, तेल लगाना और ख़ुशबू लगाना जायज़ है।

किसी चीज़ की धूनी लेने से, हुक़्क़ा, सिगरेट पीने और नसवार खाने से रोज़ा टूट जाता है।

क़ै हो जाने से रोज़ा नहीं टूटता, चाहे कितनी हो।

मरीज़, मुसाफ़िर, गर्भवती और दूध पिलाने वाली औरत के लिए रमज़ान के अन्दर रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं है। अगर वे इन दिनों रोज़ा रखने में तक्लीफ़ महसूस करें, तो बाद में क़ज़ा कर सकते हैं।

रोज़ा रखते वक़्त रात को या सेहरी खाते वक़्त यह पढ़ना चाहिए—

'व बिसौमि ग़दिन नवैतु मिन शहरि र-म-ज़ा-न०'

(मैं रमज़ान के कल के रोज़े की नीयत करता हूं।)

इफ़्तार के वक़्त पढ़े—

अल्लाहुम-म इन्नी ल-क सुम्तु व बि-क आमन्तु व अलै-क त-वक्कल्तु व अला रिज़्क़ि-क अफ़तर्तु०'

(ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए रोज़ा रखा और तुझ पर ईमान लाया और तेरे ऊपर भरोसा किया और तेरे रिज़्क से खोला)

एतकाफ़

रमज़ान की बीसवीं तारीख़ को सूरज डूबने से पहले किसी मस्जिद में रात-दिन बैठने और बिना बड़ी मजबूरी के

जैसे टट्टी-पेशाब वग़ैरह और खाने-पीने, वुज़ू, ग़ुस्ल करने के लिए, ईद का चांद देखकर रोज़ा इफ़्तार करने तक बाहर न निकलने को एतकाफ़ कहते हैं। अगर कोई खाना पहुंचाने वाला मौजूद हो, तो खाने के लिए भी न निकले, वैसे पूरा महीना भी एतकाफ़ में बैठा जा सकता है। मस्जिद ऐसी होनी चाहिए कि जिसमें पांचों वक़्त जमाअत से नमाज़ होती हो।

ज़कात

सोना, चांदी और नक़दी की ज़कात

हर ऐसे मालदार पर ज़कात वाजिब है, जिसके पास कम से कम साढ़े बावन तोले चांदी या साढ़े सात तोले सोना हो, चाहे ख़ूबसूरत ज़ेवर हो या साढ़े बावन तोला चांदी की क़ीमत के बराबर नक़दी हो, ज़्यादा की कोई हद नहीं।

चांदी और सोने की ज़कात देने का आसान तरीक़ा यह है। उस वक़्त के भाव बाज़ार के मुताबिक़ उसकी रक़म लगा दी जाए और फिर जो रक़म बने, उसका चालीसवां हिस्सा यानी $2\frac{1}{2}\%$ रक़म ज़कात होगी।

अगर कुछ सोना है, कुछ चांदी है, लेकिन दोनों का निसाब पूरा नहीं होता, तो अफ़ज़ल यह है कि इन दोनों की क़ीमत लगाई जाए। अगर वह क़ीमत $52\frac{1}{2}$ तोला चांदी की क़ीमत के बराबर हो जाती है, तो चांदी के हिसाब से ज़कात देनी चाहिए।

ऊपर ज़िक्र किए गए माल पर ज़कात वाजिब होने के लिए ज़रूरी है कि उस पर साल गुज़र जाए, अगर एक साल गुज़रने से पहले काम आ गया, तो ज़कात वाजिब नहीं।

अगर शुरू साल भी ज़कात का निसाब मौजूद था और आख़िर साल में भी, लेकिन बीच में कुछ कमी-बेशी होती रही, मगर निसाब से कम न हुआ, तो साल के आख़िर में

जितनी पूंजी मौजूद होगी, उस पर ज़कात दी जाएगी।

अगर बीच साल में कुछ माल बढ़ जाए, जैसे शुरू में $52\frac{1}{2}$ तोले की क़ीमत की नक़दी थी, बीच साल में बढ़ गई, जैसे दोगुनी हो गई, तो साल के ख़त्म पर नक़दी की ज़कात अदा कर देनी चाहिए।

कारोबारी सामान पर ज़कात

अगर कारोबारी सामान की क़ीमत कम से कम $52\frac{1}{2}$ तोला चांदी की क़ीमत के बराबर हो जाती है, तो उस पर भी ज़कात वाजिब हो जाती है।

दुकान वग़ैरह का ख़र्चा असल रक़म से मिनहा किया जा सकता है।

ज़कात के लिए ज़रूरी है कि इंसान एक साल तक निसाब वाला रहे।

गाय और बकरी की ज़कात

अगर किसी ने अपनी ज़रूरत के अलावा सिर्फ़ कारोबार या नस्ल कुशी के लिए ऊंट-गाय और बकरियां पाल रखी हैं, तो उन पर ज़कात वाजिब है। उन जानवरों पर ज़कात वाजिब नहीं, जिनसे वह ख़ुद काम लेता है, चाहे उनके निसाब की तायदाद ज़कात से भी क्यों न बढ़ जाए।

ऊंट की ज़कात

कम से कम पांच ऊंट पर ज़कात वाजिब है। अगर

पांच ऊंट हों, तो बीच की बकरी ज़कात दे। नौ ऊंटों तक एक बकरी वाजिब है। जब दस हो जाएं तो दो बकरियां देनी पड़ेंगी। फिर जब ग्यारह होंगे, तो तीन बकरियां। इसी पर सोच लीजिए। चौबीस ऊंटों तक हर पांच ऊंटों पर एक बकरी ज़कात है। जब पचीस हो जाएं, तो फिर एक ऐसा बच्चा ऊंट जो उम्र के दूसरे साल में दाख़िल हो रहा हो, देना वाजिब है पैंतीस तक, फिर 36 से 45 पर ऐसा ऊंट देना वाजिब है जो उम्र के तीस साल में दाख़िल हो रहा हो, फिर 61 से 75 तक पर एक ऐसा ऊंट जो पांचवें साल में दाख़िल हो रहा हो वाजिब है। फिर 76 से 90 तक पर दो ऐसे ऊंट जो तीसरे साल में दाख़िल हो रहे हों फिर 71 से 120 तक पर दो ऐसे ऊंट जो चौथे साल में दाख़िल हो रहे हैं, देना वाजिब है, जब 120 से बढ़ें तो हर चालीसवें ऊंट पर एक ऐसा ऊंट जो चौथे साल में दाख़िल हो रहा हो और हर पचासवें पर एक ऐसा ऊंट जो चौथे साल में दाख़िल हो रहा हो, देना वाजिब है।

ग़ाय की ज़कात

अगर कम से कम तीस गाय-भैंस मौजूद हों तो उन पर एक ऐसा बछड़ा ज़कात के तौर पर देना वाजिब है जो उम्र के दूसरे साल में हो। और जब चालीस हो जाएं, तो ऐसी एक गाय ज़कात के तौर पर देना वाजिब है जो तीसरे साल में हो। इसी तरह फिर हर तीसवें पर दूसरे साल में दाख़िल होने वाली और हर चालीसवें पर तीसरे साल में दाख़िल

होने वाली गाय देना वाजिब है।

बकरियों की ज़कात

हर चालीसवें के बाद एक बकरी वाजिब है 120 तक, फिर 120 से 200 तक दो बकरियां फिर 201 से 300 तक तीन बकरियां, फिर 300 से ऊपर हर सौ पर एक बकरी वाजिब है। जानवरों की पहचान में सब छोटे-बड़े नर-मादा जानवरों में कोई फ़र्क़ नहीं है। अगर सब क़िस्म के जानवरों के सिर्फ़ छोटे बच्चे हों, उनमें बड़ा जानवर कोई न हो, तो उनमें कोई ज़कात नहीं, जैसे सिर्फ़ बकरी के छोटे बच्चे हों, भेड़ या गाय के छोटे बच्चे हों, तो कोई ज़कात नहीं है।

अगर कोई आदमी निसाब वाला है और क़र्ज़ भी लिए है, तो क़र्ज़ निकालने के बाद अगर निसाब का बाक़ी माल ज़कात को पहुंच जाता है, तो ज़कात वाजिब है, वरना नहीं।

- ज़कात, क़र्ज़ लेने वाला, क़ैदी, मुसाफ़िर, पढ़ने वाला (अगरचे अपने यहां मालदार ही क्यों न हो) मुहताज, बेवा, यतीम, जिनके पास ज़कात का निसाब न हो, को देनी चाहिए।
- ख़ुदा के दीन को सरबुलन्द करने के लिए दी जा सकती है।
- जो आदमी निसाब वाला हो, उसको ज़कात देना जायज़ नहीं है।
- मां-बाप, दादा-दादी, नाना-नानी और अपनी औलाद,

पोते-पड़पोते, नवासे को ज़कात देना जायज़ नहीं। इसी तरह ख़ाविन्द अपनी बीवी को और बीवी अपने ख़ाविन्द को ज़कात नहीं दे सकती।

- उश्र (यानी पैदावार की ज़कात)
- अगर ज़मीन बारिश के पानी से सींचीजाती है तो ऐसी ज़मीन पर $\frac{1}{10}$ हिस्सा उश्र वाजिब होता है।
- अगर ज़मीन नहर या कुंएं या टयूबवेल वग़ैरह से सींचीजा सकती है, तो उसकी पैदावार पर $\frac{1}{10}$ हिस्सा वाजिब है।
- उश्र हर क़िस्म की फ़स्ल पर वाजिब है।

हज का बयान

फ़र्ज़ होने की शर्तें

हर ऐसे आदमी पर जो अक़्ल वाला हो और बालिग़ हो, हज फ़र्ज़ है, जिसके पास इतनी रक़म हो जाए जिसके ज़रिए वह बैतुल्लाह शरीफ तक आने-जाने का ख़र्चा और सफ़र के दिनों में अपने बाल-बच्चों का ख़र्चा अदा कर सकता हो।

उम्र भर में सिर्फ़ एक बार हज फ़र्ज़ है।

किसी माज़ूर आदमी पर हज फ़र्ज़ नहीं है, चाहे वह कितना ही मालदार हो। माज़ूर से मुराद अंधा, लंगड़ा, लूला, फ़ालिजज़दा, बहुत ज़्यादा बूढ़ा, जो सफ़र के क़ाबिल न रहा हो, वग़ैरह।

हज करने का तरीक़ा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर ओर के लोगों के लिए एक हद मुक़र्रर कर दी है, जिसे मीक़ात कहते हैं। जब आदमी वहां पहुंचे तो पहला सारा पहनावा बदल दे और ख़ास पहनावा (फ़क़ीराना) पहन ले, जिसे एहराम कहते हैं, जो बे-सिली दो चादरें होती हैं, एक को तहबंद के तौर पर बांध लिया जाता है, दूसरे को चादर के तौर पर बदन पर लपेट लिया जाता है।

एहराम बांधने के बाद न तो ख़ुशबू लगाना जायज़ है,

न कंधा करना, सर खुला रखना होता है, मोज़े और जुराबें नहीं पहनी जा सकतीं, सिर्फ़ जूते पहने जा सकते हैं, जिसमें पांव अक्सर नंगा हो, वह बेहतर है। सिला हुआ कपड़ा पहनना नाजायज़ है।

औरतें सर और मुंह छिपा सकती हैं, लेकिन मुंह पर कपड़ा चिमटा न रहे, बल्कि थोड़ा दूर हो।

आदमी घर से भी एहराम बांध कर हज के सफ़र को रवाना हो सकता है।

फिर एहराम बांधने के बाद हर उस वक़्त, जब बैठे, उठे, लेटे और कहीं से उतरे, और कहीं चढ़े, किसी क़ाफ़िले को मिले, जब नमाज़ पढ़कर फ़ारिग़ हो तो उस वक़्त ऊंची आवाज़ से पढ़े—

'लब्बैक अल्लाहुम-म लब्बैक ला शरी-क ल-क लब्बैक इन्नल हम-द वन-निअ म-त ल-क वल मुल-क ला शरी-क लक०'

(ऐ अल्लाह ! मैं हाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं, ऐ मेरे रब ! मैं हाज़िर हूं। बेशक सारी तारीफ़ें और नेमतें तेरे लिए हैं और बादशाही में तेरा कोई शरीक नहीं।)

फिर मक्का मुकर्रमा पहुंचते ही बैतुल्लाह शरीफ़ पहुंचे। बैतुल्लाह पर जब नज़र पड़े, तो पुकार उठे—

'ला इला-ह इल्लल्लाह व ला नअबुदु इल्ला इय्याहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल काफ़िरून०'

(अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। हम उसके सिवा किसी की इबादत नहीं करते, अपनी इताअत उसी के लिए

ख़ास करते हैं, अगरचे उसे काफ़िर नापसन्द करें।)

फिर बैतुल्लाह शरीफ़ पहुंचकर तलबिया (लब्बैक....) कहता हुआ और दुआएं मांगता हुआ बैतुल्लाह का सात बार तवाफ़ करे।

तवाफ़ हज्रे अस्वद से बोसा देकर शुरू करे और हर तवाफ़ के बाद उसे बोसा दे। अगर लोगों की भीड़ की वजह से बोसा मुम्किन न हो, तो लकड़ी उसे लगाकर या कपड़ा उसे छूकर उसे बोसा दे देना काफ़ी है।

तवाफ़ की अलग-अलग दुआएं नक़ल की गई है। हम दो-तीन नक़ल करते हैं—

'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बरु अल्लाहुम-म इन्नी अस अलुक्ल अफ़-व वल आफ़ि-य-त फ़िद-दुन्या वल आख़िरति सुबहानल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि०'

(शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो सबसे बड़ा है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में माफ़ी और आफ़ियत चाहता हूं। अल्लाह पाक ज़ात है और सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह की मदद के बग़ैर हम में किसी काम की ताक़त नहीं।)

'अल्लाहुम-म अग़्निनी बिमा रज़क़-तनी व बारिक ली फ़ीहि वख़्लुफ़ अला कुल्लि ग़ाइबतिल ली बिख़ैरिन०'

(ऐ अल्लाह! जो कुछ तूने मुझे दिया है, उस पर मुझे

क़नाअत नसीब फ़रमा और उसमें मेरे लिए बरकत अता फ़रमा और मेरी जो चीज़ें मेरे पास नहीं हैं, उसकी बेहतर ख़बरगीरी फ़रमा।)

फिर मक़ामे इब्राहीम[1] पर पहुंच कर दो रक्‌अत नमाज़ अदा करे।

फिर सफ़ा और मरवह की ओर जाकर उनकी सई करे, यानी सात बार उन पर दौड़ लगाए। दौड़ने की शुरूआत सफ़ा पहाड़ी से करे और मर्वः पर ख़त्म करे।

सई के दौरान की दुआएं

1. अल्लाहुम-म स्तअ-मिलनी बि सुन्नति नबी यि-क व त-वफ़्फ़नी अला मिल्लति ही व अग़लानी मिन मुज़िल्लातिल फ़तन०

(ऐ अल्लाह! मुझसे काम ले उसी तरीक़े पर जो तेरे नबी का तरीक़ा है और मुझे मौत दे उसी रास्ते पर जो तेरे नबी का रास्ता है और ज़िंदगी में बचा उन फ़ित्नों से जो सीधे रास्ते से यह करने वाले हैं।)

2. रब्बिग़-फिर वर-हम व तजा वज़ अम्मा तालमु इन्न-क अन्तल अज़्ज़ल अक्रम०

(ऐ मेरे रब! माफ़ कर और रहम कर मेरे जिन क़ुसूरों को तू जानता है, उनसे दर गुज़र कर। तेरी ताक़त सबसे बढ़कर है और तेरा करम भी सबसे बढ़कर है।)

---

1. मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिस पर चढ़कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह को तामीर किया था।

- फिर वापस आकर हजामत बनवाए, नहाए और एहराम खोल दे।
- हज के दिनों से पहले जब चाहे हरम की हदों से बाहर जाकर फिर एहराम बांध ले और उमरा अदा करे। उमरे की भी यही शक्ल है, जो बयान हुई यानी तवाफ़, सई और सफ़ा व मर्वः

फिर जब हज के दिन आ जाएं[1], तो जहां हो, एहराम बांध ले और लब्बैक कहते हुए 8 ज़िलहिज्जा को मिना पहुंचे। वहां एक दिन और एक रात ठहरें, फिर 9 ज़िलहिज्जा सूरज निकलने के बाद मिना से अरफ़ात को तलबिया कहते हुए जाएं। ज़वाल के बाद ख़ुत्बा सुनें, जो हज का अमीर दे रहा होता है, फिर ज़ुहर और अस्र की दोनों नमाज़े एक अज़ान और दो तक्बीरों के साथ पढ़ी जाती हैं।

रब्बि अऊज़ु बि-क अन अस् अलु-क मा लै-स ली बिही इल्मुन व इल्लम तग़्फ़िर ली व तर्हमनी अकुम मिनल ख़ासिरीन० फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि अन-त वलीयि फ़िर-दुन्या व ल आख़िरति त-वफ़्फ़नी मुस्लिमंव-व अल हिक़्नी बिस्सालिहीन० इन-न रब्बी ल-समीउद्दुआ०

(ऐ रब ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं इस बात से कि मैं तुझसे ऐसा सवाल करूं जिसका मुझे केई इल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और मेरे ऊपर रहम न खाए, तो मैं

---

1. हज के दिन 8 ज़िलहिज्जा से 12 ज़िलहिज्जा तक है।

घाटा पाने वालों में से होकर रहूंगा। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही मेरी दुनिया और आख़िरत में कारसाज़ है। मुझे फ़रमांबरदार बनाकर मार, और मेरा हश्र नेक लोगों के साथ कर। बेशक मेरा रब दुआएं सुनने वाला है।)

रब्बना ला तुआ ख़िज़ना इन नसीना औ अख़ताना रब्बना वला तह्मिल अलैना इसरन कमा ह-मलतहू अलल्लज़ी-न मिन क़ब्लिना रब्बना व ला तुहम्मिलना मा ला ता-क़-त लना बिही वअ-फ़ अन्ना वग़्फ़िर लना वर्हमना अन-त मौलाना फ़न्सुर्नी अलल क़ौमिल काफ़िरीन० रब्बना ला तुज़िग क़ुलू बना बा-द इज़ हदैतना व ह ब लना मिल-ल-दुन-क रहम: इन्न-क अन्तल वह्हाब०

(ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ जब हम भूल जाएं और हमसे ख़ता हो जाए। ऐ रब हमारे, ऐसा बोझ हमारे ऊपर न रख, जो तूने हमसे पहले लोगों पर रखा था, ऐ रब हमारे, न लाद हम पर वह बोझ जिसकी हम ताक़त नहीं रखते। हमें माफ़ कर दे और हमें बख़्श दे। हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा कर्त्ता-धर्त्ता है और काफ़िरों के ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा। ऐ रब हमारे! न टेढ़ा कर हमारे दिलों को हिदायत बख़्शने के बाद और अपनी ओर से ख़ास रहमत फ़रमा। बेशक तू ही तो है सब कुछ देने वाला।)

फिर सूरज डूबते ही मुज़दलफ़ा के लिए लब्बैक कहते हुए कूच किया जाता है।

फिर मुज़दलफ़ा जाकर एक अज़ान और दो तक्बीरों के

साथ पहले मग़्रिब की नमाज़ और फिर इशा की नमाज़ पढ़ें। सफ़र की वजह से सुन्नतें न पढ़े अलबत्ता वित्र ज़रूर पढ़े जाएं।

फिर 10 ज़िलहिज्जा को सूरज निकलने से पहले मुज़दलफ़ा से मिना को चलना चाहिए, और वहां से सात कंकरियां चने के बराबर साथ ले जाए। मिना पहुंचते ही सीधा जमरा उक़्बा के पास पहुंचे। जमरा उक़्बा की ओर इस तरह मुंह करके खड़ा होना चाहिए कि बैतुल्लाह बाईं ओर हो और मिना दाएं ओर फिर जमरा उक़्बा को सात कंकरियां मारे और हर कंकड़ी मारते वक़्त अल्लाहु अक्बर कहे। फिर कंकरियां मार कर यह दुआ पढ़नी चाहिए।

'अल्लाहुम-म मज-अलहु लना हज्जम मबरूरन व ज़म्बन मग़्फ़ूरा०'

(ऐ अल्लाह! इस हज को क़ुबूल फ़रमा और गुनाह माफ़ फ़रमा)

फिर मिना आकर कुरबानी करे फिर हजामत कराए, नहाए और एहराम खोल दे और अपना लिबास पहन ले, फिर बैतुल्लाह में जाकर दस्तूर के मुताबिक़ तवाफ़ करें।

फिर उसी दिन मिना वापस आ जाएं और 12-13 ज़िलहिज्जा तक मिना ठहरें। 12 ज़िलहिज्जा तक फिर आना ज़रूरी है। यह तवाफ़ 11, 12, 13 ज़िलहिज्जा को भी किया जा सकता है।

फिर हर रोज़ तीन ज़वाल के बाद तीन जमरों यानी स्तूनों पर सात-सांत कंकरियां मारे। पहले और दूसरे जमरे

को कंकरियां मारने के बाद जो दुआ चाहें, मांगें, तीसरे को मारते वक़्त यह दुआ पढ़ें।

'अल्लाहु अक्बर अग़मन लिश शैतानि व हिज़्बिही अल्लाहुम-म तस्दीक़म बि कि ताबि-क व इत्तिबा अल-लिसुन्नतिक०'

(अल्लाह सबसे बड़ा है है। यह (मेरा कंकरिय मारना) शैतान और उसकी जमाअत को भगाने के लिए है। ऐ अल्लाह! (मेरा यह काम) मेरी किताब की तस्दीक़ के लिए है और तेरे नबी की पैरवी के लिए है।)

फिर जब मदीना को रवानगी हो तो बैतुल्लाह का तवाफ़ किया जाता है।

सदक़ा-ए-फ़ित्र

सदक़ा-ए-फ़ित्र यानी फ़ितराना हर उस बालिग़ आदमी पर वाजिब है, जो ज़कात वाला है या जिसके पास ज़रूरत से इतना ज़्यादा माल हो कि अगर उसे बेचा जाए, तो ज़कात वाला बन जाए और सदक़ा देने वाले के माल पर साल गुज़रना ज़रूरी नहीं।

सदक़ा-ए-फ़ित्र ईद से एक दिन पहले अदा करना ज़्यादा मुनासिब है, ताकि वह ग़रीब जिसे फ़ितराना दिया जा रहा है, ईद में दूसरों के साथ ख़ुशी में शरीक हो सके।

सदक़ा-ए-फ़ित्र अपनी ओर से और अपनी नाबालिग़ औलाद की ओर से अदा करना वाजिब है।

सदक़ा-ए-फ़ित्र पौने दो सेर गेहूं या साढ़े तीन सेर जौ वग़ैरह है। चाहे आदमी गेहूं दे दे, चाहे उसकी रक़म दे दे।

सदक़ा-ए-फ़ित्र ऐसे आदमी को देना चाहिए जो बहुत ज़्यादा ग़रीब हो।

अगर सदक़ा-ए-फ़ित्र में गेहूं और जौ के अलावा कोई और जिंस देना चाहे तो गेहूं या जौ के चालू भाव से क़ीमत का अन्दाज़ा करके उस क़ीमत में दूसरी जिंस ख़रीद कर दे दी जाए।

कुरबानी

जिस आदीम पर ज़कात और सदक़ा-ए-फ़ित्र वाजिब है, उस पर कुरबानी भी वाजिब है।

कुरबानी के तीन दिन हैं—10 ज़िलहिज्जा सुबह से लेकर 12 ज़िलहिज्जा शाम तक सूरज डूबने से पहले।

शहर वालों के लिए और उनके देहात वालों के लिए जो ईद की नमाज़ पढ़कर मुनासिब वक़्त में घर पहुंच सकते हों, ईद की नमाज़ से पहले कुरबानी करना जायज़ नहीं।

शौहर और बीवी अगर दोनों मालदार हैं तो दोनों अलग-अलग कुरबानी करेंगे।

बकरी, भेड़, दुंबा, गाय, भैंस और ऊंट नर हो या मादा उसकी कुरबानी की जा सकती है।

बकरी, भेड़, दुंबा एक आदमी की कुरबानी हो सकती है।

गाय, भैंस और ऊंट में ज़्यादा से ज़्यादा सात आदमी शरीक हो सकते हैं।

दुंबा छः माह, बकरी-भेड़ एक साल, गाय, भैंस दो साल और ऊंट पांच साल का होना ज़रूरी है।

कुरबानी का गोश्त अन्दाज़े से बांटना जायज़ नहीं, पूरा-पूरा तौल कर बांटना चाहिए।

कुरबानी का सारा गोश्त ख़ुद अपने इस्तेमाल में भी लाया जा सकता है। बेहतर यह है कि तीन हिस्से कर लिए जाएं—एक अपने लिए, एक दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए,

और एक ग़रीबों और मिस्कीनों के लिए।

अंधे, काने जानवर की क़ुरबानी जायज़ नहीं है।

उस जानवर की क़ुरबानी भी जायज़ नहीं, जिसकी एक आंख की तिहाई रोशनी, एक कान का तिहाई हिस्सा और दुम का तिहाई हिस्सा कटा हो।

मरियल और बहुत ज़्यादा दुबले जानवर की क़ुरबानी जायज़ नहीं है।

ऐसे लंगड़े जानवर की क़ुर्बानी जायज़ है जो लंगड़ा कर चलता हो,

लेकिन पांव ज़मीन पर रखता हो। अगर न रख सकता हो, तो जायज़ नहीं है।

जिस जानवर के कान पैदाइशी तौर पर नहीं हैं, उसकी क़ुरबानी जायज़ नहीं है।

जिसके सींग पैदाइश से न हों, उसकी क़ुरबानी जायज़ है।

बहुत छोटे-छोटे पैदाइशी कानों वाले जानवर की क़ुरबानी जायज़ है।

जिस जानवर के दांत आधे से ज़्यादा गिर गए हों, उसकी क़ुरबानी जायज़ नहीं है।

क़ुरबानी की खाल की रक़म मस्जिद पर ख़र्च नहीं की जा सकती।

क़ुरबानी की कोई चीज़ क़साई को मुआवज़े में देना जायज़ नहीं है।

ख़स्सी जानवर की क़ुरबानी जायज़ है।

कुरबानी का जानवर ज़िब्ह करते वक़्त की दुआ

1. इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वल-अर-ज़ हनीफ़ंव-व मा अना मिनल मुश्रिकीन इन-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन०

(बेशक, मैंने अपना मुंह ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले की ओर मुतवज्जह किया और यकसू हो गया और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं। बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी, और मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत अल्लाह के लिए है, जो सारी दुनियाओं का पालनहार है, उसका कोई शरीक नहीं और उसी का हुक्म दिया गया है और मैं पहला मुसलमान हूं।)

फिर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहकर ज़िब्ह करे। फिर ज़िब्ह करने के बाद यह दुआ पढ़े—

अल्लाहुम-म तक़ब्बल मिन्नी कमा तक़ब्बल-त मिन ह्बीबि-क मुहम्मदिंव-व ख़लीलि-क इब्राही-म अलैहिमस्स-लातु वस्सलामु०

(ऐ अल्लाह! मुझसे (मेरी यह क़ुरबानी) क़ुबूल फ़रमा, जिस तरह तूने अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अपने ख़लील हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम से क़ुबूल फ़रमाई।)

अक़ीक़ा

जब बच्चा या बच्ची पैदा हो, तो उसके सातवें दिन या फिर जब मौक़ा मिले, हर बच्चे की ओर से दो बकरियां और बच्ची की ओर से एक बकरी ज़िब्ह की जाए और नाम रखा जाए।

अक़ीदा ताक़त रखने वाले आदमी के लिए ज़रूरी है।

जिस जानवर की क़ुरबानी जायज़ नहीं, उसका अक़ीक़ा भी ज़ायज़ नहीं।

बच्चा या बच्ची का बाल मूंड कर ताक़त के मुताबिक़ चांदी या सोने से तौल कर उस चांदी या सोने को ख़ैरात कर दिया जाए।

बच्चा जब पैदा हो तो उसके दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में तक्बीर कहनी चाहिए और कोई मीठी-सी चीज़ पर आयतें पढ़कर क़ुरआन मजीद की कुछ आयतें पढ़कर और उसे मुंह में चबाकर बच्चे के तालू पर चिपका देना चाहिए।

अलैहिस्सलाम से क़ुबूल फ़रमाई।)

अक़ीक़ा

जब बच्चा या बच्ची पैदा हो, तो उसके सातवें दिन या फिर जब मौक़ा मिले, हर बच्चे की ओर से दो बकरियां और बच्ची की ओर से एक बकरी ज़िब्ह की जाए और नाम रखा जाए।

अक़ीदा ताक़त रखने वाले आदमी के लिए ज़रूरी है।

जिस जानवर की कुरबानी जायज़ नहीं, उसका अक़ीक़ा भी ज़ायज़ नहीं।

बच्चा या बच्ची का बाल मूंड कर ताक़त के मुताबिक़ चांदी या सोने से तौल कर उस चांदी या सोने को ख़ैरात कर दिया जाए।

बच्चा जब पैदा हो तो उसके दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में तक्बीर कहनी चाहिए और कोई मीठी-सी चीज़ पर आयतें पढ़कर कुरआन मजीद की कुछ आयतें पढ़कर और उसे मुंह में चबाकर बच्चे के तालू पर चिपका देना चाहिए।

निकाह का बयान

कोई औरत बेवाह हो या तलाक़शुदा या कुंवारी, अगर बालिग़ है, तो वह ख़ुद कम से कम दो अक़्ल वाले और बालिग़ मुसलमान गवाहों के सामने किसी मर्द से कहे कि मैं अपना निकाह तेरे साथ करती हूं और वह क़ुबूल कर ले तो निकाह हो गया या किसी नाबालिग़ लड़की का वली किसी को गवाहों के सामने कहे कि मैंने फ़्लां लड़की का निकाह तेरे साथ कर दिया और उसने क़ुबूल कर लिया, तो निकाह हो गया।

गवाह कम से कम एक मर्द और दो औरतें हों।

गवाहों का मुसलमान होना ज़रूरी है।

अगर लड़की कुंवारी या नाबालिग़ है, तो उसका अपने मुंह से जवाब देना ज़रूरी नहीं, सिर्फ़ सुनकर ख़ामोश रहना काफ़ी है।

अगर औरत बेवा या तलाक़शुदा है और बालिग़ है तो उसका अपनी इजाज़त से जवाब दिलाना ज़रूरी है।

मुसलमान औरत का निकाह मुसलमान मर्द के सिवा किसी के साथ जायज़ नहीं है।

अगर औरत अह्ले किताब है, तो उसकी शादी मुसलमान मर्द से हो सकती है, लेकिन मुसलमान औरत की शादी किसी अह्ले किताब मर्द से नहीं हो सकती।

निकाह की मज्लिस में ईजाब व क़ुबूल से पहले निकाह का ख़ुत्बा पढ़ना मस्नून है।

निकाह का ख़ुत्बा

अलहम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नुअमिनु बिही व न-त-वक्कलु अलैहि व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति आमालिना मंय्याह्दि हिल्लाहु व ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिलहु फ़ला हादि-य लहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलहू अर-स-लहू बिलहक़्क़ि बशीरंव-व नज़ीरन बैन- य-दयि स्सा-अति मंय्युतिअिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द र-श-द व मंय्यअ सिमुहा फ़इन्नहू ला यज़ुरू इल्ला नफ़्सहू व ला यज़ुरुल्ला-ह शैआ०

या ऐयुहन्नासुत्तक़ू रब्बहु मुल्लज़ी ख़-ल-क़ कुम मिन नफ़्सिंव वाह्दितिवं-व ख़-ल-क़ मिन्हा ज़ौ जहा व बस-स मिन्हुमा रिजालन कसीरंव-व निसा-अ वत्तक़ुल्ला-हल्ल ज़ी तसाअलू-न बिही वल अरहामि इन्नल्लाह-ह का-न अलैकुम रक़ीबा०

या ऐयुहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्न-न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून०

या ऐयुहल-लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व क़ुलू क़ौलन सदीदा युस्लिह लकुम आमालकुम व मग़्फ़िर लकुम ज़ुनूबकुम व मंय्यतिअिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द फ़ा-ज़ फ़ौज़न अज़ीमा०

या ऐयुहन्नासु इन्ना ख़-लक़्नाकुम मिन ज़-करिंव-व उन्सा व ज-अल नाकुम शुअूबंव-व क़बाइ-ल लितआरफ़ू

इन-न अक-र-म-कुम अिन्दल्लाहि अतक़ाकुम इन्नल्लाह-ह अलीमुन ख़बीर०

व नस्अलुल्ला-ह अंय्यज अलना मिम्मंय्युतीअहू व युतीअु रसूलहू व यत्तीबिअु रिज़वानहू व मजतनिबु स-ख़-तहू फ़इन्नमा नहनु बिही व लहू अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्म-द निन्नबी यिल उम्मीई व आलिही व अस्हाबिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयातिही व अह्लि बैतिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरन कसीरा०

(सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। हम उसी का गुणगान करते हैं, उसी से मदद चाहते हैं और उसी से बख़्शिश चाहते हैं और उसी पर ईमान रखते हैं, उसी पर भरोसा करते हैं और हम पनाह तलब करते हैं अल्लाह की अपने नफ़्सों के शर से और अपने बुरे कामों से। जिसको वह हिदायत दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह करे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और मैं गवाही दे सकता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह ने उन्हें हक़ के साथ भेजा है, जो ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले हैं क़ियामत के आने से पहले। जो आदमी इताअत करे अल्लाह और उसके रसूल की, पस वह सीधे रास्ते पर आ गया और जो इन दोनों की नाफ़रमानी करे, बस वह अपने सिवा किसी को नुक़्सान न देगा और अल्लाह का भी कुछ न बिगाड़ सकेगा।

ऐ लोगो ! अपने रब से डरो जिसने पैदा किया तुमको एक जान से और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और फैलाए (पैदा करके) इन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें और डरते रहो अल्लाह से जिसके वास्ते से आपस में सवाल करते हो और ख़बरदार रहो क़राबत वालों से। बेशक अल्लाह तुम पर निगहबान है।

ऐ ईमान वाले ! अल्लाह से डरो और ठीक-ठीक बात कहो। अल्लाह तुम्हारे कामों की इस्लाह करेगा, तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जिस आदमी ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की, उसने कामियाबी हासिल की, बहुत बड़ी कामियाबी। ऐ लोगो ! हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी ज़ातें और क़बीले बना दिए, ताकि तुम एक दूसरे की पहचान कर सको। तुम में से ख़ुदा के नज़दीक इ़ज़्ज़तदार वह है, जो ख़ुदा से ज़्यादा डरने वाला है। बेशक अल्लाह जानन्ने वाला और ख़बर रखने वाला है।

और हम सवाल करते हैं अल्लाह से कि वह बनाए हमें उनमें से जो उसकी ताबेदारी करते हैं और उसके रसूल की ताबेदारी करते हैं और उसकी रज़ा को ढूंढ़ते हैं और उसके ग़ज़ब से बचते हैं। बेशक हम उसी के साथ हैं और उसी के लिए हैं। ऐ अल्लाह ! रहमत फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो नबी उम्मी हैं और उनकी औलाद पर और उनके सहाबा पर और उनकी घरवालियों पर और उनकी औलाद पर और उनके तमाम ख़ानदान पर और

सलामती नाज़िल फ़रमा जो ज़्यादा से ज़्यादा हो।

फिर ईजाब व कुबूल के बाद निकाह करने वाले की ओर मुतवज्जह होकर कहा जाए, यानी यह दुआ दी जाए—

'बारकल्लाहु ल-क व बारकल्लाह अलै-क व ज-म-अ बे-न कुमा फ़ी ख़ैरिन सुब-हा-न रब्बि-क रब्बिल इज़्ज़ति अम्मा यासिफ़ून० व सलामुन अलल मुरसलीन० वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०'

(अल्लाह! (इस निकाह को) तेरे लिए बरकत की वजह बनाए। तेरे ऊपर बरकत नाज़िल करे और तुम दोनों (मियां-बीवी) को भलाई पर इकट्ठा रखे। पाक है तेरा रब जो इज़्ज़त का रब है, जिस तरह कि लोग उसकी ख़ूबी बयान करते हैं और सलामती हो रसूलों पर और सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं।)

किसी औरत का अपने बाप-दादा, नाना, बेटा, पोता, भाई, मामूं, चचा, भतीजा, भांजा, दामाद, ससुर और ससुर के बाप से निकाह जायज़ नहीं है।

सौतेले बाप और सौतीली औलाद से भी निकाह जायज़ नहीं है।

इसी तरह दूध शरीक भाई, उसकी औलाद से और उसके बाप से भी निकाह जायज़ नहीं है।

दो बहनों, फूफी, भतीजी, ख़ाला, भांजी, वग़ैरह का एक मर्द के साथ एक वक़्त में निकाह जायज़ नहीं, अलबत्ता एक के मरने या तलाक़ के बाद दूसरी से निकाह जायज़ है।

दूध शरीक बाप, मामूं, भांजे, भतीजे वग़ैरह से निकाह हराम है। चार से ज़्यादा औरतें एक ही वक़्त में निकाह में रखना हराम है।

किसी औरत ने किसी मर्द से ज़िना किया तो अब औरत की मां और उस औरत की औलाद का उस मर्द से निकाह करना जायज़ नहीं है, लेकिन ज़िना करने वाले मर्द और ज़िना करने वाली औरत की औलाद का आपस में निकाह जायज़ है।

लड़की का वली सबसे पहले बाप, फिर दादा, फिर परदादा, फिर सगा भाई, फिर सौतेला भाई, फिर भतीजा, फिर भतीजे का लड़का, फिर सगा चचा, फिर सौतेला चचा, फिर सगे चचा का लड़का, फिर सौतेले चचा का लड़का, फिर बाप का चचा।

अगर इनमें से कोई न हो, तो फिर मां, नानी, दादी, नाना, सगी बहन, सौतेली बहन वग़ैरह वली हैं। वाज़ेह रहे कि पहले नम्बर के आदमी के होते हुए दूसरे नम्बर वाला आदमी क़तई तौर पर वली नहीं बन सकता।

मह्र

निकाह के लिए मह्र ज़रूरी शर्त है। बग़ैर मह्र मुक़र्रर किए निकाह जायज़ है, लेकिन मह्र इस हालत में मह्र मिस्ल होगा। यानी उस औरत के ख़ानदान का रिवाजी मह्र वाजिब होगा।

मह्र की ज़्यादा से ज़्यादा कोई हद नहीं है और कम से

कम हनफ़ियों के नज़दीक दस दिरहम (लगभग चालीस रुपए) है।

मह्र ताक़त के मुताबिक़ मुक़र्रर करना चाहिए, जिस पर दोनों फ़रीक़ राज़ी हो जाएं।

मह्र निकाह के वक़्त और निकाह के बाद भी दिया जा सकता है।

निकाह के बाद औरत का और औलाद का खर्चा ताक़त के मुताबिक़ मर्द के ज़िम्मे होगा।

मह्र में औरत अपनी मर्ज़ी से कम व बेश कर सकती है और चाहे तो सारा मह्र माफ़ भी कर सकती है।

मह्र में मंक़ूला (वह जायदाद वह है जो एक जगह से दूसरी जगह ले जाई जा सके।) और ग़ैर-मंक़ूला जायदाद दी जा सकती है।

मह्र फ़ौरी तौर पर औरत के हवाले करने की कोशिश करनी चाहिए।

मह्र में सिर्फ़ औरत को ख़र्च करने का अधिकार है, क्योंकि उसकी वह अकेली मालिकिन है। मह्र की अदाएगी में हेरा-फेरी बहुत बड़ा गुनाह है।

तलाक़

तलाक़ का हक़ सिर्फ़ मर्द को हासिल है अलबत्ता औरत को ख़ुलअ का हक़ हासिल है। (ख़ुलअ का मतलब है कि औरत अपने मर्द के साथ वक़्त गुज़ारना न चाहती हो और तलाक़ लेना चाहती हो, तो मर्द को कुछ रक़म

वग़ैरह देकर तलाक़ देने पर राज़ी कर ले और वह कुछ लेकर तलाक़ दे दे।)

मर्द को तीन तलाक़ें देने का हक़ है।

तलाक़ तीन क़िस्म की हैं—

1. रजई, 2. बाइन, 3. मुग़ल्लज़ा।

1. तलाक़ रजई—यह है कि आदमी अपनी बीवी को तलाक़ दे। अभी इद्दत नहीं गुज़री थी कि उसने रुजू कर लिया। इसी तरह वह दो बार कर सकता है। अगर वह तीसरी बार तलाक़ देगा, तो फिर रुजू न कर सकेगा।

2. तलाक़ बाइन—यह है कि आदमी तलाक़ देते वक़्त ऐसे सख़्त शब्द इस्तेमाल करे जिससे निकाह में फ़साद पैदा हो जाए, जैसे, यों कहे कि मैंने तुझे बहुत सख़्त तलाक़ दी या गन्दी तलाक़ दी या शदीद तलाक़ दी या बहुत लम्बी तलाक़ दी या बहुत चौड़ी तलाक़ दी वग़ैरह तो इस तरह एक तलाक़ देगा, तब भी निकाह टूट जाएगा, और बग़ैर निकाह पढ़ाए रुजू जायज़ न होगा।

3. तलाक़े मुग़ल्लज़ा—यह है कि आदमी अपनी बीवी को तीन तलाक़े दे। तीन तलाक़ की शक्ल में रुजूअ और दूसरा निकाह जायज़ नहीं, अलबत्ता इस शक्ल में वह औरत पहले शौहर के निकाह में दोबारा आ सकती है जबकि वह औरत दूसरी जगह निकाह कर ले। वह शौहर मियां-बीवी वाले ताल्लुक़ात क़ायम करने के बाद किसी वक़्त उसे तलाक़ दे दे या फ़ौत हो जाए तो इद्दत गुज़ार कर पहले शौहर के साथ चाहे तो निकाह कर सकती है।

रुजू करने के लिए इद्दत के अन्दर ज़ुबान से कहना ज़रूरी नहीं कि मैंने रुजूअ किया, बल्कि औरत से मर्द व औरत के ताल्लुक़ात क़ायम कर लेने से अपने आप रुजू हो जाएगा। तीन तलाक़ें एक वक़्त में देना गुनाह है, अगर ये तलाक़ें हो जाती हैं

इद्दत

तलाक़शुदा औरत अगर ऐसी है, जिसे हैज़ आता है, तो उसकी इद्दत तीन हैज़ है।

अगर औरत ऐसी है जिसे हैज़ नहीं आता, तो उसकी इद्दत चांद के हिसाब से तीन माह है।

अगर औरत हामिला (गर्भवती) है तो उसकी इद्दत बच्चा जनने तक है।

सम्भोग से पहले अगर किसी औरत को तलाक़ दी गई तो उसकी कोई इद्दत नहीं। तलाक़ के तुरन्त बाद उसका निकाह किया जा सकता है। ऐसी औरत को मह्र का आधा हक़ मिलेगा।

इद्दत के दिनों में औरत को बनाव-सिंगार से परहेज़ करना चाहिए, जबकि वह बाइना और मुग़ल्लज़ा तलाक़ हासिल कर चुकी है। रजई तलाक़ वाली को बनाव-सिंगार करना चाहिए, मुम्किन है उसका शौहर रुजूअ करे।

कफ़न-दफ़न

कफ़न की तफ़्सील

मर्द के कफ़न के लिए तीन चीज़ें होती हैं—

1. इज़ार, 2. लिफ़ाफ़ा, 2. कफ़नी।

1. इज़ार—वह चादर जो मैयत के क़द के बराबर ली जाती है। ढाई गज़ लम्बा, सवा गज़ चौड़ा होता है।

2. लिफ़ाफ़ा—वह है जो मैयत के क़द से थोड़ी लम्बी होती है जो सर और पांव की ओर बांधी जा सकती है। 3 गज़ लम्बी और 1 $\frac{1}{2}$ गज़ चौड़ी होती है।

3. कफ़नी—वह है जो क़मीज़ की तरह गले में डाली जाती है। 2 $\frac{1}{2}$ गज़ लम्बी और एक गज़ चौड़ी होती है।

औरत के कफ़न के पांच कपड़े होते हैं। ऊपर ज़िक्र की गई तीन चीज़ों के अलावा सीना बन्द और सर बन्द।

सीना बन्द दो गज़ लम्बा और सवा गज़ चौड़ा होता है।

सर बन्द डेढ़ गज़ लम्बा और बारह गिरह चौड़ा होता है।

कफ़नाने का तरीक़ा

चारपाई पर पहले लिफ़ाफ़ा, फिर इज़ार, फिर कफ़नी का एक निचला हिस्सा बिछा दिया जाए, फिर मैयत को उस पर लिटा दिया जाए। फिर कफ़नी का ऊपर वाला बाक़ी हिस्सा। कफ़नी के गले से मैयत का सर निकाल कर ऊपर डाल दिया जाए, जिस तरह क़मीज़ पहनाया जाता है, फिर

इज़ार और लिफ़ाफ़ा को मैयत पर लपेट लिया जाए, फिर लिफ़ाफ़े को ऊपर और नीचे लपेट कर कपड़े की पट्टी के साथ बांध दिया जाए। अगर औरत है तो सीना बन्द के साथ भी औरत की छाती लपेट दी जाए और सर बन्द यानी टोपी को सर में पहुंचाया जाए और बाक़ी हिस्सा सर पर डाल दिया जाए और औरत के बालों को दो हिस्से करके कफ़नी के ऊपर सीने पर रख दिए जाएं।

दफ़नाने का तरीक़ा

उत्तर-दक्खिन दिशा में क़द के मुताबिक़ 4 फिट गहरी और तीन फिट के क़रीब चौड़ी क़ब्र खोदी जाए, फिर उसके अन्दर पच्छिम को खोद कर लहद बनाई जाए, जिसमें मैयत को आसानी से लिटाया जा सके। ऊपर से थोड़ा तंग हो ताकि बन्द करने में आसानी हो और गिरने से बची रहे। फिर मैयत को कम से कम तीन आदमी क़ब्र में उतारें। एक सर की ओर से उठाएं, दूसरा पांव की ओर से और तीसरा कमर में कोई कपड़ा डाल कर ऊपर को उठाए और बड़े आराम से लहद में रखा जाए। लहद में उतारने वाले ये शब्द। पढ़ें,

बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाह०

(अल्लाह के नाम से इसको दीन व रसूल के मुताबिक़ दफ़न कर रहा हूं।)

फिर लहद को कच्ची ईंटों या मिट्टी के ढेलों से अच्छी तरह बन्द कर दिया जाए, फिर वह खोदी हुई मिट्टी क़ब्र में

डाल दी जाए और मिट्टी डालते वक़्त सभी यह दुआ पढ़ें—

'मिनहा ख़-लक़्नाकुम व फ़ीहा नुईदुकुम व मिनहा नुख़रिजुकुम तारन उख़रा०

क़ब्र की शक्ल ऊंट के कोहान की तरह बनाई जाए।

आग की पकी हुई कोई चीज़ क़ब्र पर लगाना जायज़ नहीं है।

लहद के बग़ैर 'तज्जर' में दफ़न करना जायज़ नहीं, अलावा इसके कि लहद का तैयार करना और ठहर सकना मुम्किन न हो।

अगर बच्चा मुर्दा पैदा हुआ और उसके सब अंग ठीक हों, तो उसका नाम रखा जाए और कपड़े में लपेट कर दफ़न कर दिया जाए, उसकी नमाज़ जनाज़ा न पढ़ी जाए।

अगर बच्चा मुर्दा पैदा हुआ और उसके अभी अंग बने नहीं थे, तो उसका नाम रखकर दफ़न करने की ज़रूरत नहीं, बल्कि यों ही गढ़ा खोदकर दफ़न कर दिया जाए।

अगर बच्चा ज़िंदा पैदा हुआ, मगर फिर मर गया, तो उसको कफ़न दिया जाए। उसकी नमाज़ भी पढ़ी जाएगी और उसका नाम भी रखा जाएगा।

वसीयत करना

आदमी मरते वक़्त अपने माल की एक तिहाई की वसीयत कर सकता है। वसीयत ऐसे रिश्तेदारों के हक़ में करना चाहिए जो उसके वारिस बन सकें।

तिहाई माल से ज़्यादा वसीयत करना जायज़ नहीं और अगर की है तो उस पर अमल न किया जाएगा। हां, अगर किसी का कोई भी वारिस दुनिया में मौजूद न हो तो सारे माले की वसीयत कर सकता है।

वसीयत पर अमल करने से पहले उसके कफ़न-दफ़न और क़र्ज़े पर उसका माल ख़र्च किया जाएगा। अगर बचेगा तो वसीयत पर अमल होगा, यानी बाक़ी माल की तिहाई वसीयत के मुताबिक़, जिसके हक़ में वसीयत की गई है, उसे दी जाएगी।

कुछ लोग वारिसों से नाराज़ होकर सारा तरका किसी ग़ैर के नाम वसीयत कर देते हैं, ऐसा करना नाजायज़ है। मैयत के तरके से उसका ताज़ियत के लिए आने वालों को खिलाना-पिलाना नाजायज़ है। यह मरने वाले के यतीम बच्चों, बेवा और दूसरे वारिसों पर ज़ुल्म है।

ज़िब्ह करने का तरीक़ा

जानवर को क़िब्ला रुख़ लिटा कर तेज़ छुरी हाथ में लेकर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' कहकर उसके गले को काटे, यहां तक कि सांस लेने वाली नली, दाना-पानी और अन्दर ले जाने वाली नली, एक दाएं ओर वाली शहे रग और एक बाईं ओर वाली शहरग कट जाएं

ज़िब्ह करते वक़्त इस बात का भी ख़्याल रखे कि सांस की नली में जो गिरह होती है, वह ज़िब्ह करते वक़्त जानवर के सर की ओर रहे। छुरी उसे छोड़कर थोड़ा जानवर के

बदन की ओर करके चलाए। अगर इन चार नसों में तीन कट गईं और एक न कटी तो भी जानवर हलाल है। अगर दो कटी और दो न कटीं तो हराम है।

अगर किसी आदमी ने भूलकर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' नहीं कहा, तो हलाल है। अगर जान-बूझकर नहीं कहा, तो हराम है।

ज़िब्ह करते वक़्त अगर पूरा गला कट जाए, तो भी जानवर हलाल है।

लेन-देन (मामले)

रेहन

जो चीज़ किसी के पास रेहन रखी जाए, उसे उस चीज़ से फ़ायदा उठाने का कोई हक़ नहीं, जैसे बाग़ रेहन रखा, ज़मीन रेहन रखी, दुकान रेहन रखी, मकान रेहन रखा, कोई मशीन वग़ैरह रेहन रखी, तो इन चीज़ों की आमदनी रेहन की रक़म में कम करनी पड़ती है, ख़ुद रेहन रखने वाले के लिए इन्हें इस्तेमाल करना जायज़ नहीं। अगर कोई दूध वाला जानवर रेहन है, तो उसका दूध इस्तेमाल करना जायज़ है, इसलिए कि जानवर को चारा वग़ैरह भी तो दिया जाता है। जो चारा देगा, वह दूध का हक़दार हैं।

बे-देखे भी ख़रीदना-बेचना जायज़ है, लेकिन ख़रीदने वाले को यह अख़्तियार है कि अगर पसन्द न आए तो वापस कर दे। बेचने वाले को कोई अख़्तियार नहीं कि वह सौदा न दे।

अगर चीज़ किसी ने देखकर ख़रीद ली, लेकिन बेचने वाले ने उसे उसका ऐब न बताया और ख़रीदने वाले को बाद में मालूम हुआ तो सौदा वापस किया जा सकता है। बेचने वाले को उसे वापस लेने पर मजबूर किया जाएगा।

अगर कोई आदमी कोई जानदार इस शर्त पर बेचता है कि जैसे यह कि उसके बीस रुपए लूंगा और जब उसे ज़िब्ह करोगे तो सिरी या चमड़ा या चीज़ का कहे कि मुझे देनी

होगी, तो यह सौदा नाजायज़ है।

एक ही क़िस्म की चीज़ों के बारे में वज़न या नाप-तौल में कमी-बेशी जायज़ नहीं, और न समय लगाना (वक़्फ़ा) जायज़ है यानी हाथ के हाथ लेन-देन ज़रूरी है।

अगर चीज़ों की क़िस्में अलग-अलग हैं, लेकिन इस बात में बराबर है कि दोनों तौली जा सकती हैं या दोनों नापी जाती हैं, तो उनमें कमी-बेशी वो जायज़ है, लेकिन वक़्फ़ा जायज़ नहीं। यह भी हाथ के हाथ लेनी ज़रूरी है।

खरे और खोटे सोने और चांदी में कोई फ़र्क़ नहीं। इसमें कमी-ज़्यादती जायज़ नहीं। चांदी और सोना ख़रीदते वक़्त हाथों हाथ रक़म देना और चांदी-सोना लेना ज़रूरी है। आसान हल यह है कि पहले अपनी चीज़ बेच दी जाए, फिर दूसरी चीज़ खरीदी जाए।

एक आदमी फ़स्ल काटने से पहले या बाद में (जबकि माल हाज़िर (मौजूद) न हो, वह कहे कि जैसे मैं आपसे इतने मन गन्ना गेहूं या चना या बाजरा इतने रुपए मन लूंगा, तो यह सौदा भी जायज़ है, लेकिन इसके जायज़ होने के लिए नीचे लिखी शर्तें हैं। अगर इनमें से कोई एक न पूरी की जाए, तो यह सौदा नाजायज़ है।

1. बेची हुई चीज़ की क़िस्म तै करना जैसे गेहूं न० 591, चनाब न० 70, मैक्सी पाक वग़ैरह

2. भाव तै कर लिया जाए। जैसे तीस रुपए मन। सिर्फ़ यह कहना कि इतना गेहूं लूंगा, और भाव न तै किया, सौदा न होगा।

3. जितने की लेनी हो, उसे ख़ास कर लिया जाए, जैसे दो सौ रुपए की लूंगा।

4. जितने की लेनी हो, वह पूरी रक़म उस वक़्त अदा कर दी जाए, कुछ दी और कुछ देने का वायदा किया, तो सौदा नाजायज़ है।

5. मुद्दत मुक़र्रर हो, महीना, दिन वग़ैरह और मुद्दत कम से कम एक महीना हो।

6. अगर ऐसी चीज़ है, जिसके पहुंचाने पर किराया लगता है, तो उस जगह का तै करना ज़रूरी है कि फ़्लां जगह कर दी जाएगी। अगर ऐसी है जिस पर कोई किराया नहीं लगता, तो जगह तै करना ज़रूरी नहीं।

मुज़ारबत (पार्टनरशिप)

मुज़ारबत यह है कि एक आदमी किसी को कुछ रक़म कारोबार के लिए दे और तै करेगा कि जो नफ़ा होगा, उसमें हम दोनों शरीक होंगे, यह जायज़ है। लेकिन इसकी भी कुछ शर्तें है, अगर ये न पूरी की जाएं, तो मुज़ारबत नाजायज़ है।

1. जितना रुपया देना तै हो, वह पूरे का पूरा कारोबार करने वाले को दे दिया जाए।

2. नफ़ा की बांट की दर भी तै की जाए, जैसे पैसे वाला 1/4, या 1/3 या 1/2 लेगा। बाक़ी कारोबार करने वाला लेगा।

3. अगर नुक़्सान हो जाए, तो पैसा वाला अदा करेगा।

4. नफ़ा में किसी रक़म का ख़ास कर लेना जायज़ नहीं, जैसे पैसे वाला यह कहे कि जो नफ़ा हो, उसमें साल में सिर्फ़ सौ रुपए मुझे देना, यह जायज़ नहीं। अगर पैसे वाला भी कारोबार में शरीक हो, तो जिस तरह मुनाफ़ा की रक़म तै की जाए, उस पर अमल होगा, नुक़्सान बहरहाल पैसे वाले के ज़िम्मे होगा।

शुफ़आ (पड़ोस)

किसी शुफ़आ करने वाले के लिए जायज़ नहीं कि शुफ़आ दायर करने के बाद शुफ़आ का हक़ लेकर अलग हो जाए। हक़ शुफ़आ के तौर पर रक़म लेना हराम है।

अगर उस आदमी ने जिसे शुफ़आ का हक़ है, सौदे की ख़बर मिलते ही शुफ़आ करने का इज़्हार न किया, तो फिर बाद में वह शुफ़आ करने का हक़ नहीं रखता या यह कहा कि मैं शुफ़आ नहीं करूंगा, तो इस शक्ल में भी शुफ़आ का हक़ उसे नहीं है।

मुज़ारअत (खेती-बाड़ी)

एक आदमी किसी को ज़मीन खेती के लिए देता है और पैदावार के बंटवारे की दर आपस में मुक़र्रर कर लेते हैं, तो यह जायज़ है। इसकी भी कुछ शर्तें पूरी न की जाएं तो मुज़ारअत जायज़ नहीं है।

1. ज़मीन खेती के क़ाबिल हो,

2. ज़मींदार और किसान आक़िल व बालिग़ हों।

3. खेती की मुद्दत तै न की गई हो।

4. यह भी तै कर लिया गया हो कि बीज किसके ज़िम्मे होगा, ज़मींदार के या किसान के,

5. यह भी तै करना होगा कि ज़मीन में क्या खेती की जाएगी।

6. हिस्से की बांट भी तै होना ज़रूरी है कि ज़मींदार कितना लेगा और किसान कितना।

7. ज़मीन का तुरन्त किसान को क़ाबिज़ बनाना ज़रूरी है।

8. ज़मींदार की पैदावार में किसान और ज़मींदार का शरीक रहना।

इजारा

इजारे पर ज़मीन देना भी दुरुस्त है कि आदमी यह तै कर ले कि यह ज़मीन मेरी है। इस पर तुम खेती करो, सारी

पैदावार भी तुम्हारी और ख़र्चा भी तुम्हारा मुझे अपनी ज़मीन का इतना मुआवज़ा छःमाही या सालाना दे दिया करो या फ़्लां-फ़्लां क़िस्म का ख़र्चा मैं दूंगा, तो यह जायज़ है।

फल पकने से पहले उनको ख़रीदना जायज़ नहीं।

रोज़मर्रा की मस्नून दुआएं

1. सोने के वक़्त की दुआ

1. बिस्मि-क अल्लाहुम-म अमूलु व अह्या०

'ऐ अल्लाह! तेरे ही नाम में ज़िंदगी को खोता (सोता) हूं और हासिल करता (जागता) हूं।'

2. अल्लाहुम-म क़िनी अज़ा-ब-क यौ-म तजमओ व तबअसु अिबा-द-क०

'ऐ अल्लाह! मुझे अपने उस दिन के अज़ाब से बचा, जब तू अपने बन्दों को उठाएगा और जमा करेगा।'

2. सपना देखने पर दुआ

ख़ैरन तलक़ाहु व शर्रन त-वक़्क़ाहु ख़ैरल-लना व शर्रन अला आ दाइना वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

'इस सपने की भलाई तुम्हें नसीब हो और बुराई से बचे रहो, यह हमारे हक़ में बेहतर और हमारे दुश्मनों के लिए वबाल हो और सह हम्दु व सताइश अल्लाह के लिए है, जो तमाम काइनात का परवरदिगार है।'

3. जागने की दुआ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बाद मा अमातना व इलैहिन्नुशूर०

'तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें मुर्दा कर देने के बाद दोबारा ज़िंदगी बख़्शी और आख़िरकार उसी के

सामने हाज़िर होना है।'

4. बैतुल ख़ला (संडास) में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल ख़ुब्सि वल ख़बाइस॰

'ऐ अल्लाह! मैं ख़बीस जिन्न मर्दों और खबीस जिन्न औरतों से तेरी पनाह मांगता हूं।'

5. बैतुल ख़ला से बाहर आते वक़्त की दुआ

1. ग़ुफ़रा-न-क

'ऐ अल्लाह! मैं तेरी बख़्शिश चाहता हूं।'

2. अल हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अज़-ह-ब अन्निल अज़ा व आफ़ानी॰

'सब तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझसे तक्लीफ़ को दूर किया और आफ़ियत दी।'

6. वुज़ू करते वक़्त की दुआ

अ-त-वज़्ज़ऊ बिस्मिल्लाहि॰

'अल्लाह के नाम से वुज़ू की शुरूआत करता हूं।'

7. वुज़ू कर चुकने के बाद की दुआ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु नह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलहू अल्लाहुम-मज-अलनी मिनत्तव्वाबी-न वज-अलनी मिनल

मु-त-तह्हिरीन०

'मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है और उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों में से बना और मुझे पाक-साफ़ रहने वालों में से बना।'

8. मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

अल्लाहुम-मफ़्तहली अब-वा-ब रहमति-क०

'ऐ अल्लाह! मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दे।'

9. मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क मिन फ़ज़्लि-क व रहमति-क०

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे फ़ज़्ल और रहमत का सवाल करता हूं।'

10. घर से निकलने की दुआ

बिस्मिल्लाहि त-वक्कलतु अलल्लाहि व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि०

'अल्लाह के नाम से (मैं बाहर क़दम रखता) हूं अल्लाह ही पर मैंने भरोसा किया और अल्लाह की मदद के बग़ैर कोई चारागरी और कोई ताक़त नहीं हासिल हो सकती।'

11. घर में दाख़िल होने की दुआ

अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क ख़ैरल मौलजि व ख़ैरल मख़रिज बिस्मिल्लाहि वलजना व बिस्मिल्लाहि ख़-रजना व अलल्लाहि रब्बना त-वक्कलना॰

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे बेहतर आने और बेहतर जाने का सवाल करता हूं अल्लाह के नाम से हम अन्दर आए और अल्लाह ही के नाम से हम बाहर निकले और अल्लाह, परवरदिगार पर हमारा भरोसा है।'

12. सफ़र पर रवाना होते वक़्त की दुआ

अल्लाहुम-म बि-क असूलु व बि-क अहूलु व बि-क असीरु॰

'ऐ अल्लाह! तेरी ही तौफ़ीक़ से (मंज़िल) पर पहुंच सकता हूं। तेरी तौफ़ीक़ से वापस लौट सकता हूं और तेरी तौफ़ीक़ से चल सकता हूं।'

13. सवारी पर सवार होते वक़्त की दुआ

सुब-हानल्लज़ी सख़्-ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन्कलिबून॰

'पाक है बे-ऐब है वह ज़ात जिसने इस (सवारी) को हमारे लिए फ़रमांबरदार बना दिया है, वरना हम ख़ुद उसको क़ाबू में न कर सकते थे और हमें अपने परवरदिगार की ओर लौट कर जाना है।'

14. नाव या जहाज़ पर सवार होते वक़्त की दुआ

बिस्मिल्लाहि मजरीहा व मुरसाहा इन-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्रहीम०

'अल्लाह के नाम पर है इसका चलना और पहुंचना। बेशक मेरा रब माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।'

15. जब आदमी सफ़र शुरू कर चुके तो यह दुआ पढ़े

अल्लाहुम-म हव्विन अलैना हाज़स्स-फ़-र व अत्वि अन्ना बादहू अल्लाहुम-म अन्तस्साहिबु फ़ि स्स-फ़रि वल ख़लीफ़्तु अह्लि अय्याहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन वासाइस्सफ़रि व काबतिल मंज़रि व सूइल मुन्क़लीब फ़िल मालि वल अह्लि०

'ऐ अल्लाह! हम पर हमारे इस सफ़र को आसान कर दे। इसकी दूरी को हमारे लिए समेट ले। ऐ अल्लाह! तू हमारा सफ़र में साथी है और हमारे बाल-बच्चों का निगरां है। ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह मांगते हैं सफ़र की मुसीबतों से और बुरे नज़ारों से और अपने माल, बीवी और औलाद में और बुरे तरीक़े से लौटने पर।'

16. किसी को सफ़र पर रवाना करते वक़्त की दुआ

अस्तौदिअुकुमल्लाहुल्लज़ी ला युजीअु व दाए इही०

'मैं तुम्हें अल्लाह को सौंपता हूं जिसके पास अमानतें बरबाद नहीं होतीं।'

17. रात को अंधेरे में सफ़र करने की दुआ

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़-ल क़॰

'पनाह में आता हूं अल्लाह के तमाम कलिमों के ज़रिए उसकी तमाम मख़्लूक़ के शर से।'

18. सफ़र से वापसी की दुआ

आइबू-न ताइबू-न आबिदू-न लिरब्बिना हामिदून॰

'हम सफ़र से लौटने वाले हैं, बार-बार तौबा करने वाले हैं, बन्दगी बजा लाने वाले हैं और अपने रब की हम्द करने वाले हैं।'

19. दूध पीने और अच्छी चीज़ खाने पर दुआ

अल्लाहुम- बारिक लना फ़ीहि व ज़िदना मिन्हु॰

'ऐ अल्लाह! इसमें हमारे लिए बरकत इनायत फ़रमा और इसे हमारे लिए बढ़ा दे।'

20. खाना शुरू करने की दुआ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम॰

'अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है।'

21. किसी की दावत खाने पर दुआ

अल्लाहुम्मत अिम मन अत-अ-मनी व स्क़ि मन

सक़ानी व बारिक फ़ी अम्वालिही०

'ऐ अल्लाह ! अपनी मेहरबानी से उसे खाना खिला जिसने मुझे खाना खिलाया और उसे पिला जिसने मुझे पिलाया और उसके माल में बरकत इनायत फ़रमा ।'

22. खाना खा चुकने के बाद की दुआ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-मना व सक़ाना व ज-अ-लना मिनल मुस्लिमीन०

'अल्लाह का शुक्र है जिसने हमें खिलाया-पिलाया और मुसलमान बनाया ।'

23. चांद देखने की दुआ

अल्लाहु अक्बर अल्लाहुम-म अहिल्लहू अलैना मिल अम्नि वल ईमानि वस्सला मति वस्सलामि वत्तौफ़ीकि लिमा तुहिब्बु व तरज़ा रब्बुना व रब्बुकल्लाह०

'अल्लाह सबसे बड़ा है। ऐ अल्लाह ! यह चांद हम पर अम्न व ईमान और सलामती और इस्लाम के साथ निकाल और इस काम की तौफ़ीक़ की वजह ठहरा जो तुझे प्रिय और पसन्द है। ऐ चांद ! हमारा और तेरा परवदिगार अल्लाह है।'

24. रोज़ा रखते वक़्त की दुआ

व बिसौमि ग़दिन नवैतु मिन शहरि रम-ज़ा-न०

'और कल के रोज़े की नीयत करता हूं जो रमज़ान के महीनें का है।'

24. रोज़ा इफ़्तार करने की दुआ

अल्लाहुम-म ल-क सुम्तु व बि-क आमन्तु व अलै-क त-वक्कल्तु व अला रिज़्कि-क अफ़तर्तु॰

'ऐ मेरे अल्लाह! तेरे लिए रोज़ा रखता हूं और तुझ पर ईमान लाता हूं और तुझ पर भरोसा करता हूं और तेरी दी हुई रोज़ी से रोज़ा इफ़्तार करता हूं।'

26. आंधी उठने पर दुआ

1. अल्लाहुम- इन्नी अस अलु-क खै-र हा व ख़ै-र मा फ़ीहा व ख़ैरम-मा दरासिलत बिही व अऊज़ु बि-क मिन शर्रिहा व शर्रि मा फ़ीहा व शर्रि मा उर्सिलत बिही॰

(मुस्लिम)

'ऐ अल्लाह! मैं इस आंधी की बेहतरी से और इस बेहतरी से जो इसमें है और जिस ग़रज़ के लिए भेजी गई है, उसकी बेहतरी चाहता हूं उसके शर से जो उसके अन्दर है उसके शर से और जिस ग़रज़ के लिए भेजी गई है और तेरी पनाह चाहता हूं।'

2. अल्लाहुम-म ला तक़्तुलना वि ग़-ज़बि-क व ला तुह्लिकना बिअज़ाबि-क व आफिना क़ब-ल ज़ालिक॰

'ऐ अल्लाह! अपने ग़ज़ब से हमें मार न डाल और अपने अजाब से हमें हलाक न कर और इनसे पहले हमें बचा ले।

27. बादलों के बरसने पर दुआ

अल्लाहुम-म सय्यिबना नाफ़िआ॰

'ऐ अल्लाह ! इनको वर्षा बरसाने वाला और नफ़ा देने वाला बना दे।'

28. बिजली के कड़कने की दुआ

व य सब्बिहुर्र रअ-दु बिहम्दिही वल मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिही॰

'बादलों की गरज अल्लाह की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करती है। फ़रिश्ते उसकी हैबत से कांपते हुए उसका गुणगान करते हैं।'

29. शादी पर शौहर की दुआ

अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क ख़ै-रहा व ख़ै-र मा ज-बल-तहा अलैहि व अऊज़ु बि-क मिन शर्रिहा व शर्रि मा ज-बल-तहा अलैहि॰

'ऐ अल्लाह ! मुझे उसकी अच्छाई से और जो आदतें तूने उसके स्वभाव में रखी हैं, उनके अच्छे पहलुओं से फ़ायदा पहुंचा और उसकी बुराई और उसके स्वभाव के बिगाड़ से पनाह में रख।'

30. ख़लवत की दुआ

अल्लाहुम-म जन्नबनश्शैता-न व जन्नबिश-शैता-न मा

र-ज़क़-तना०

'अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! हमें शैतान से बचाए रख और जो तूने हमारे भाग में लिखा है (औलाद) उससे शैतान को दूर रख।'

31. नया कपड़ा पहनने की दुआ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व र-ज़-क़नीहि मिन ग़ैरि हौलिन मिन्नी व ला क़ू-व-त०

'अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे कपड़ा पहनाया और बग़ैर मेरी तदबीर और ताक़त के उसे मेरी क़िस्मत में रखा।'

32. आईना देखने पर दुआ

अल्लाहुम-म हस्सन-त ख़लक़ी फ़हस्सिन ख़ुल्क़ी०

'ऐ अल्लाह! जिस तरह तूने मेरी शक्ल को ख़ूबसूरत बनाया, उसी तरह मेरे अख़्लाक़ को भी ख़ूबसूरत बना दे।'

33. अच्छी व ख़ूबसूरत चीज़ देखने की दुआ

माशाअल्लाहु ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि०

'अल्लाह, जो चाहे, अल्लाह के बिना किसी को कोई ताक़त नहीं है।'

34. बीमार के लिए शिफ़ा की दुआ

अल्लाहुम-म अज़-हिबिल बा-स रब्बन्नासि व शिफ़ व

अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ा अ-क शिफ़ा उल-ला युग़ादिरु सुक़ मन०

'ऐ अल्लाह! तक्लीफ़ दूर फ़रमा। ऐ लोगों के परवरदिगार! शफ़ा इनायत क़र, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरी शिफ़ा के सिवा और कोई शिफ़ा नहीं, ऐसी शिफ़ा दे जो बीमारी का नाम व निशान न रहने दे।

35. मुसीबत में फंसे आदमी को देखने पर दुआ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी नि मिम्मबत ला-कल्लाहु बिहि व फ़ज़्ज़लनी अला कसीरिम मिम्मन ख़-ल-क़ तफ़्जीला०

'अल्लाह का शुक्र है कि मैंने तुझे मिलने वाली मुसीबत से मुझको आफ़ियत में रखा और अपनी बहुत-सी मख़्लूक़ात पर मुझे फ़ौक़ियत दी।'

36. किसी मुसीबत में फंसे होने पर दुआ

1. या हय्यु या क़य्यूमु बिरहमति-क अस्तग़ीसु०

'ऐ ज़िंदा और हमेशा रहने वाली हस्ती, ऐ कायनात का इन्तिज़ाम करने वाले, तेरी रहमत से फ़रियाद करता हूं।'

2. ला इला-ह इल्ला अनत सुब-हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०

'तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू ही बे-ऐब व पाक है। मैं ही अपनी जान पर ज़ुल्म ढाने वाला हूं।'

3. रब्बि इन्नी मग़्लूबुन फ़न्तसिर०

'ऐ मेरे अल्लाह! मैं कमज़ोर व नातवां हूं, मेरी मदद फ़रमा।'

4. अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन शर्रि इबादि-क हस्बुनल्लाहु व निअमल वकील०

'ऐ अल्लाह! मैंने तेरे बन्दों के शर से तेरी पनाह मांगता हूं। हमें अल्लाह ही काफ़ी है और वह सबसे अच्छा कर्त्ता-धर्त्ता है।'

37. कोई नुक़्सान या मुसीबत पड़ने पर दुआ

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० अल्लाहुम-म अिन्द-क अह्तसिबु मुसीबती फ़-अजिरनी फ़ीहा व अब्दिलनी मिनहा ख़ैरा०

'बेशक हम सब अल्लाह के लिए हैं और हमें उसी की ओर पलट कर जाना है। ऐ अल्लाह! मैं अपनी मुसीबत की तुझसे फ़रियाद करता हूं, इसकी वजह से मुझे अज्र दे और इसके बदले मुझे भलाई इनायत फ़रमा।'

38. ज़ालिम के ज़ुल्म पर डर की दुआ

अल्लाहुम-म इन्ना नज-अलु-क फ़ी नुहूरिहिम व नअुज़ु बि-क मिन शुरूरिहिम०

'ऐ अल्लाह! हम तुझे ही इन दुश्मनों के मुक़ाबले में लाते हैं और उनके शर से तेरी ही पनाह चाहते हैं।

39. क़र्ज़ की अदाएगी की दुआ

1. अल्लाहुम-म अक्फ़िनी बिहलालि-क अन हरामि-क व अग़निनी बिफ़ाज़्लि-क अम्मन सिवा-क०

'ऐ अल्लाह मुझे अपनी हलाल रोज़ी इनायत फ़रमा कर हराम रोज़ी से बचा ले और अपनी मेहरबानी से तुझे अपने अलावा से बेनियाज कर दे।'

2. अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल हम्मि वल हुज़्नि वल अज्ज़ि वल-कस्लि वल बुख़्लि वल जु-बनि व अऊज़ु बि-क मिनग़लब तिद दैनि व क़हर्रिजालि०

'ऐ अल्लाह ! मैं पनाह मांगता हूं ग़म, दुख, बेसहारा पन, सुस्ती, कंजूसी और बुज़दिली से और पनाह मांगता हूं आपकी क़र्ज़ की ज़्यादती से और लोगों के ज़ुल्म से।'

40. गुमशुदा चीज़ की वापसी की दुआ

अल्लाहुम-म राद्दिज़्ज़ाल्लति व हादिय ज़्ज़लालति अन-त तह्दी मिनज़लालति उर्दू अलय-य ज़ाल्लती बिक़ुदरति-क व सुलतानति-क फ़ इन्नहा मिन अताइ-क व फ़ज़्लिक०

'ऐ अल्लाह ! जो गुमशुदा चीज़ों को वापस लाने वाला है, गुमराही से हिदायत देने वाला है। ऐ अल्लाह ! तू ही गुमराही से हिदायत बख़्श सकता है, अपनी ताक़त और क़ुदरत से मेरी गुमशुदा चीज़ वापस कर दे। बेशक यह तेरी मेहरबानी होगी।

41. नए फलों और अनाज के सामने आने की दुआ

अल्लाहुम-म बारिक लना फ़ी स-म रिना व बारिक लना फ़ी मदीनतिना व बारिक लना फ़ी साअिना व बारिक लना फ़ी मुद्दिना०

'ऐ हमारे अल्लाह ! हमारे फलों में बरकत इनायत फ़रमा। हमारे शहरों को आबाद फ़रमा और हमारे नाप-तौल के पैमानों में बरकत इनायत फ़रमा।'

42. नज़र लग जाने पर असराफ को हटाने की दुआ

अल्लाहुम-म अज़्हिब हर्रहा व बर्दहा व वस्बहा०

'ऐ अल्लाह ! नज़र की गर्मी और उसकी सर्दी और उसकी तक्लीफ़ को दूर फ़रमा दे।'

43. क़ब्रिस्तान में दाख़िल होने की दुआ

अस्सलामु अलैकुम अह्ल दयारि मिनल मोमिनी-न वल मुस्लिमी-न व इन्ना इनशाअल्लाहु बिकुम लाहिक़ून नसअलुल्ला-ह लना व लकुमुल आफ़ि-य-त०

'ऐ इस एरिया के रहने वाले मोमिन और मुसलमान भाइयो ! तुम पर सलाम हो, इनशाअल्लाह हम तुमसे बहुत जल्द आ मिलेंगे। हम अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए सुख का सवाल करते हैं।'

44. मैयत को क़ब्र में उतारने वक़्त की दुआ

बिस्मिल्लाहि व अला सुन्नति रसूलिल्लाहि०

'अल्लाह के नाम से और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए तरीक़े पर (उसकी क़ब्र के हवाले करता हूं।)